Date / /
Page L&W

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

हिंदी विभाग

2nd year - (II year)

3 - sem - मेजर पेपर

हिंदी नाट्य साहित्य (मेजर)

Paper code = HHINCT-1201

डॉ. शिवशंकर रामकिसन सुरनुर
हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्यालय,
लातूर

मो. नं = 7776989158

पाठ्यक्रम (4 क्रेडिट)

1. नाट्य विद्या का सैद्धांतिक पक्ष
   - 1.1. = नाटक की अवधारणा
   - 1.2. = नाटक और रंगमंच
   - 1.3. = नाटक के तत्व
   - 1.4. = नाटक के प्रकार

2. एक और द्रोणाचार्य – शंकर शेष (नाटक)
   - 2.1. = शंकर शेष का परिचय
   - 2.2. = एक और द्रोणाचार्य : कथावस्तु
   - 2.3. = एक और द्रोणाचार्य : चरित्र-चित्रण एवं पात्र
   - 2.4. = एक और द्रोणाचार्य : समस्याएँ और उद्देश्य

3. रावण तुम वापस आओ — (शंकर पुणतांबेकर)
   - 3.1. = शंकर पुणतांबेकर का परिचय
   - 3.2. = रावण तुम वापस आओ : कथावस्तु
   - 3.3. = रावण तुम वापस आओ : चरित्र-चित्रण एवं पात्र
   - 3.4. = रावण तुम वापस आओ : समस्याएँ और उद्देश्य

4. विशेष रचनाकार / नाटककार
   - 4.1. = भारतेंदु हरिश्चंद्र – सामान्य परिचय
   - 4.2. = जयशंकर प्रसाद – सामान्य परिचय
   - 4.3. = मोहन राकेश – सामान्य परिचय
   - 4.4. = सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – सामान्य परिचय

नाटक का सैद्धांतिक पक्ष

"नाटक" संस्कृत शब्द "नट" से बना है, जिसका अर्थ होता है "अभिनय करना"। नाटक एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो अभिनय के माध्यम से जीवन की घटनाओं, संघर्षों, भावनाओं एवं सामाजिक प्रसंगों को मंच पर प्रस्तुत करती है। इसमें संवाद, अभिनय, दृश्य, मंच, पात्र आदि के माध्यम से कथा को जीवंत रूप दिया जाता है। नाटक एक साहित्यिक विधा है जो कथानक, पात्रों, संवाद और अभिनय के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को मंच पर प्रस्तुत करती है।

1 भरत मुनि के अनुसार (नाट्यशास्त्र):
"नाट्यम् भिन्नरुचेः जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।"
अर्थात: "नाटक विभिन्न रुचियों वाले लोगों का एक साथ समान रूप से मनोरंजन करने वाली कला है।"

2. अरस्तू के अनुसार (काव्यशास्त्र)
"नाटक जीवन की अनुकृति है (Imitation of Life)।"
उन्होंने नाटक को ट्रैजेडी और कॉमेडी में विभाजित किया और इसे मानवीय क्रियाओं का आदर्श प्रस्तुतीकरण माना।

3. पंडित रामचंद्र शुक्ल के अनुसार :
"नाटक काव्य की वह विधा है जिसमें संवाद और अभिनय के द्वारा किसी कथा या भाव को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।"

4. डॉ. नगेंद्र के अनुसार:
"नाटक एक ऐसी दृश्य-श्रव्य कला है जिसमें कथानक, पात्र, संवाद, अभिनय और दृश्यावली का समन्वय होता है।"

5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार:
"नाटक जीवन का संघर्ष है, जिसमें पात्रों के विचार, भाव और क्रियाएँ संवाद के माध्यम से व्यक्त होते हैं।"

6 " रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। "

"नाटक जीवन का अनुकरण है जो रंगमंच पर अभिनय के माध्यम से दर्शकों को आनन्द, विचार और संवेदना प्रदान करता है।" नाटक एक ऐसी साहित्यिक रचना है जिसे मंच पर अभिनय के रूप में

प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें संवादों के माध्यम से कथानक को दर्शाया जाता है और जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ भावनात्मक, सामाजिक या नैतिक संदेश देना होता है।नाटक मनोरंजन के साथ-साथ समाज को शिक्षित और प्रेरित भी करता है। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा जाता है। अभिनय के समय नट पर दुष्यंत या राम जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है, इसीलिए इसे रूपक कहते हैं। नट अर्थात अभिनेता से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी ड्रामा या प्ले का पर्याय बन गया है। हिंदी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेंदु हरिश्चंद जी से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छयावाद युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छयावादोत्तर युग में लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ. रामकुमार वर्मा, जगदीशचंद्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है।

नाटक के तत्व

साहित्यिक विधाओं की कुछ संरचनात्मक विशिष्टताएँ होती हैं जो एक दूसरे से अलग पहचान बनाती हैं तथा प्रत्येक विधा को उसका अपना निश्चित स्वरूप प्रदान करती हैं। नाटक मंचन की परंपरा दुनिया भर में प्राचीन काल से चली आ रही है। यही कारण है कि अधिकांश देशों के प्राचीन साहित्य में नाट्य लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ तथा नाट्य सिद्धांतों की चर्चा काव्य सिद्धांतों की चर्चा के साथ-साथ ही शुरू हो गई। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि नाटक का स्वरूप परंपरा और प्रयोग के आधार पर निर्मित और रूपांतरित होता रहता। हिंदी नाटक की स्थिति भी ऐसी ही है इसके स्वरूप निर्माण में भारतीय और पाश्चात्य नाट्य दृष्टियों का योग रहा है। अतः भारतीय और पाश्चात्य नाट्य तत्वों की संक्षिप्त जानकारी आवश्यक है। भारतीय नाट्य सिद्धांत संस्कृत के नाटकों के आधार पर निर्मित हुए थे तथा पश्चिमी नाट्य सिद्धांतों का आधार यूनानी नाटक थे। भारतीय आचार्यों ने नाटक के तीन अनिवार्य तत्व माने हैं- वस्तु, नेता और रस। वस्तु का अर्थ है कथावस्तु, नेता यानी पात्र और रस यानी रचना से उत्पन्न होने वाले प्रभाव या उसकी अनुभूति। अर्थात् रचनाकार द्वारा अनुभूत सत्य की दर्शक अथवा पाठक को प्रतीति अथवा अनुभूति । पाश्चात्य आचार्यों ने नाटक के छः तत्व माने हैं कथावस्तु, पात्र, देशकाल, संवाद, शैली और उद्देश्य। इसके अलावा वहाँ संकलन-त्रय यानी नाटक में स्थान, समय और काल की एकता पर भी जोर दिया गया है। पश्चिम में सुखांत और दुखांत दो तरह के नाटकों का प्रचलन रहा है और पश्चिमी नाटक में द्वंद्व अथवा संघर्ष को प्रधानता दी गई और भारतीय नाटक में रसानुभूति को। नाटक के तत्वों के भीतर पश्चिम और भारतीय दोनों दृष्टियों का समावेश रहा है ।

1) कथावस्तु अथवा कथानक

नाटक की कहानी को 'कथावस्तु' या 'कथानक' कहा जाता है जिसमें घटनाओं के क्रम का विकास होता है । नाटककार अपनी कथावस्तु के चयन में कहानीकार या उपन्यासकार की भाँति अधिक सामग्री प्रयोग कर नहीं सकता। नाटककार को अभिनय में एक निश्चित समय की सीमा के भीतर ही कथानक का समावेश करना होता है इसलिए वह पूरी कथा की मुख्य-मुख्य घटनाओं को ही नाटक में इस ढंग से रखता है कि दर्शकों को कथा की प्रतीति हो जाती है ।

भारतीय आचार्यों ने नाटक में तीन प्रकार की कथाओं का निर्धारण किया है १ प्रख्यात २ उत्पाद्य ३ मिश्र प्रख्यात कथा।

प्रख्यात कथा इतिहास, पुराण से प्राप्त होती है। जब उत्पाद्य कथा कल्पना पराश्रित होती है, मिश्र कथा कहलाती है। इतिहास और कथा दोनों का योग रहता है। इन कथा आधारों के बाद नाटक कथा को मुख्य तथा गौण अथवा प्रासंगिक भेदों में बांटा जाता है, इनमें से प्रासंगिक के भी आगे पताका और प्रकरी है।

(क) आधिकारिक अथवा मुख्य कथा-जो नायक के चरित्र से सीधा सम्बन्ध रखती है।

(ख) प्रासंगिक अथवा गौण कथा-जो प्रसंगवश कथा में आ जाती है।

प्रासंगिक कथा भी दो प्रकार की होती है-

(अ) पताका - वह प्रासंगिक कथा है जो मुख्य कथा के साथ-साथ अन्त तक चलती है।

(ब) प्रकरी वह प्रासंगिक कथा है जो बीच में ही समाप्त हो जाती है। रामायण की कथा में राम की कथा के साथ-साथ अन्त तक चलने वाली भरत की कथा 'पताका' है जबकि 'शबरी' की कथा 'प्रकरी' है।

भारतीय आचार्यों के मतानुसार नाटकों की कथावस्तु पाँच प्रकार की होती है-

(i) प्रारम्भ (ii) प्रयत्न (iii) प्रत्याण (iv) नियताप्ति (v)

फलागम।

इसके अतिरिक्त नाटक में पांच संधियों का प्रयोग भी किया जाता है। वास्तव में नाटक को अपनी कथावस्तु की योजना में पात्रों और घटनाओं में इस रुप में संगति बैठनी होती है कि पात्र कार्य व्यापार को अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर सके। नाटककार को ऐसे प्रसंग कथा में नहीं रखनी चाहिए जो मंच के संयोग ना हो।

2) पात्र :

नाटक में नाटक का अपने विचारों, भावों आदि का प्रतिपादन पात्रों के माध्यम से ही करना होता है। अतः नाटक में पात्रों का विशेष स्थान होता है। नाटक में घटनाओं के आधार पर पात्र होते हैं। नाटक के

प्रमुख पात्र को 'नायक' कहते हैं। नायक ही नाटक में फल का अधिकारी होता है। नायक की पत्नी या प्रेमिका 'नायिका' कहलाती है। प्रमुख पात्र अथवा नायक कला का अधिकारी होता है तथा समाज को उचित दशा तक ले जाने वाला होता है। भारतीय आचार्यों के मतानुसार नायक विनीत, त्यागी, प्रियवादी, दक्ष, लोकप्रिय, आदर्शवादी, शास्त्रज्ञ, धर्मनिष्ठ, आत्म-सम्मानी, ओजस्वी आदि सभी गुणों से सम्पन्न होना चाहिये। किन्तु आधुनिक नाटकों में उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक नहीं माना जाता। आज नाटकों में किसान, मजदूर आदि कोई भी पात्र हो सकता है। पात्रों के संदर्भ में नाटककार को केवल उन्हीं पात्रों की सृष्टि करनी चाहिए जो घटनाओं को गतिशील बनाने में तथा नाटक के चरित्र पर प्रकाश डालने में सहायक होते हैं। पात्रों का सजीव और प्रभावशाली चरित्र ही नाटक की जान होता है। कथावस्तु के अनुरूप नायक धीरोदात्त, धीर ललित, धीर शांत या धीरोद्धत हो सकता है।

नाटक के अन्य सभी तत्व पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाते हैं। उनके आचार व्यवहार और वार्तालाप से नाटक की कथावस्तु निर्मित होती है। नाटक में नायिका के अतिरिक्त नाटक में मुख्य पात्र भी होते हैं जिनमें से कुछ नायक के सहयोगी पात्र होते हैं और कुछ प्रतिकूल अथवा विरोधी पात्र। प्रमुख विरोधी पात्र खलनायक या प्रतिनायक कहलाता है। पात्रों की संख्या के संबंध में नाटक में कोई निश्चित नियम नहीं होता। कथावस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप पक्षों की योजना की जाती है। इतना ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि उतने ही पात्र रखे जाएँ जितने कार्य व्यापार के विकास के लिए जरूरी हों। कोई भी पात्र फालतू प्रतीत नहीं होना चाहिए। इसी तरह पात्रों की संख्या इतनी अधिक न हो जाए कि नाटक के समग्र प्रभाव में विघ्न पड़े अथवा रंगमंच पर पात्रों की भीड़-भाड़ दिखाई दे। घटनाओं की जरूरत के हिसाब से ही पात्र होने चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि पात्रों के कार्य से कथानक विकसित हो और वे कथानक के अनिवार्य अंग हों।

3) उद्देश्य :

नाटक साहित्य की एक प्रमुख विधा है, जो अभिनय, संवाद और मंचन के माध्यम से किसी कथा या विचार को दर्शकों तक पहुंचाती है। नाटक का हर तत्व – पात्र, संवाद, भाव, दृश्य – किसी मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है। अतः नाटक का "उद्देश्य" उसके प्रमुख तत्वों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।

नाटक के उद्देश्य के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोणों में पर्याप्त अन्तर है। हमारा देश आदर्शवादी रहा है, अतः यहाँ साहित्य रचना किसी न किसी आदर्श को ध्यान में रखकर हुई है। यहाँ के नाटकों में धर्म, अर्थ और काम जीवन के तीन प्रमुख उद्देश्यों में से किसी न किसी एक की प्रधानता अवश्य रहती है। नाटक के अन्य तत्व इस उद्देश्य के साधन मात्र होते हैं। भारतीय दृष्टिकोण सदा आशावादी रहा है इसलिए संस्कृत के प्रायः सभी नाटक सुखांत रहे हैं। पाश्चात्य नाटकों में व्यक्त या अव्यक्त रूप से कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है किन्तु वह किसी प्रकार की जीवन मीमांसा के रूप में होता है। आन्तरिक या बाह्य संघर्ष के द्वारा दर्शक या पाठक उस उद्देश्य को समझने में सफल होते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के साथ ही साथ संघर्ष का शमन हो जाता है। पाश्चात्य नाटककार अपने इस उद्देश्य की अभिव्यक्ति स्वयं न करके कथोपकथन के माध्यम से करता है। पश्चिम नाटककारों ने या साहित्यकारों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या मानते हुए उसके प्रति यथार्थ दृष्टिकोण अपनाया है उसके प्रभाव से हमारे यहां भी कई नाटक दुखांत में लिखे गए हैं । नाटक का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि समाज और व्यक्ति के मनोबल को छूना, झकझोरना और प्रेरित करना भी है। यह उद्देश्य

ही नाटक को सार्थक, प्रभावशाली और अमर बनाता है। जिस नाटक में उद्देश्य स्पष्ट और सशक्त होता है, वही दर्शकों के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ता

4) देश काल तथा वातावरण :

देश-काल और वातावरण से पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता और वास्तविकता आती है। प्रत्येक युग, देश तथा वातावरण का चित्रण, उसकी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेशभूषा के अनुकूल होनी चाहिए। किन्तु इस चित्रण में रंगमंच की सुविधाओं और सीमित स्थान का भी ध्यान रखना होता है। देशकाल वातावरण के चित्रण में नाटककार को युग अनुरूप के प्रति विशेष सतर्क रहना आवश्यक होता है। पश्चिमी नाटक में देशकाल के अंतर्गत संकलनत्रय समय स्थान और कार्य की एकता पर बल दिया है । वस्तुतः यह तीनों तत्व' यूनानी रंगमंच' के अनुकूल थे। जहां रात भर चलने वाले लंबे नाटक होते थे और दृश्य परिवर्तन की योजना नहीं होती थी। परंतु आज रंगमंच के विकास के कारण संकलन का महत्व समाप्त हो गया है। भारतीय नाट्यशास्त्र में इसका उल्लेख ना होते हुए भी नाटक में स्वाभाविकता, औचित्य तथा सजीवता की प्रतिष्ठा के लिए देशकाल वातावरण का उचित ध्यान रखा जाता है। इसके अंतर्गत पात्रों की वेशभूषा तत्कालिक धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों में युग का विशेष स्थान है। अतः नाटक के तत्वों में देशकाल वातावरण का अपना महत्व है।

5) संवाद अथवा कथोपकथन :

नाटक में नाटकार संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है। हमारे जीवन में वाणी का जो महत्व है वही नाटक में संवादों का है। अन्य साहित्यिक विधाओं में लेखक अपनी ओर से भी कुछ कहता है किंतु नाटक का लेखक सब कुछ पात्रों के माध्यम से ही कहलाता है। पात्रों का व्यवहार और वाणी ही लेखक के कथ्य को दर्शक तक पहुँचाती है। पात्रों के चरित्र के उद्घाटन में संवादों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी पात्र के वचनों से उसके अपने बारे में परिचय मिलता है। साथ ही जो कुछ वह अन्य पात्रों के बारे में कहता है उससे अन्य पात्रों के बारे में जानकारी मिलती है। अतः संवाद सरल, सुबोध, स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए। गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी अनुभूति में बाधा होती है। संवाद को नाटक की कसौटी माना जाता है क्योंकि कथ्य की संप्रेषणीयता में संवाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद इतने लंबे नहीं होने चाहिए कि भाषा के मौखिक रूप यानी बोलने की दृष्टि से अस्वाभाविक हो जाएँ और दर्शक ऊबने लगें। न ही इतने विचार बोझिल होने चाहिए कि अस्पष्ट हो जाएँ। उनमें बोलचाल की सहजता अपेक्षित है। रंगमंच पर नाटक की सफलता या असफलता का आधार काफी हद तक उसके संवाद होते हैं।

कथोपकथन का उपयोग अक्सर कहानी को आगे बढाने, पात्रों के बारे में जानकारी देने, या कहानी में भावनामक तनाव पैदा करने के लिए किया जाता है। कथोपकथन यह नाटक का प्राण है। इसी से पात्रों के चरित्र का विकास होता है। नाटक में निरर्थक कथोपकथन की कोई गुंजाइश नहीं है। कथोपकथन स्वाभाविक, तर्कसंगत और यथासम्भव संक्षिप्त होने चाहिये। उसमे अभिनय की उपयुक्तता होनी चाहिये। कथोपकथन को आचार्यों ने तीन श्रेणियों में बाँटा है

अ) नियत श्राव्य - यह कथोपकथन कुछ निश्चित पात्रों के ही बीच होता है। रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों का सम्बन्ध उससे नहीं होता।

आ) सर्व श्राव्य - यह सबके सुनने के लिए होता है।

इ) अश्राव्य - यह रंगमंच पर उपस्थित किसी पात्र के सुनने के लिए न होकर केवल दर्शकों के सुनने के लिए होता है। इसे स्वगत कथन या स्वगत भाषण भी कहा जाता है। यद्यपि स्वगत कथन को आजकल अनुचित माना जाता है किन्तु इसकी उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

6) अभिनय :

यह नाटक का प्रमुख तत्व है जो कथानक, पात्रों और संवादों को जीवंत रूप प्रदान करता है। अभिनय के बिना नाटक की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा दर्शकों तक नाटक का संदेश और भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचती हैं। अभिनेता नाटक के पात्रों की मनोदशा, व्यक्तित्व और भावनाओं को अपने हाव-भाव, संवाद अदायगी और शारीरिक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करता है। एक अच्छा अभिनेता पात्र की भावनाओं को इतने विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करता है कि दर्शक उसमें खो जाते हैं। अभिनय में संवादों का उच्चारण, लय और तीव्रता महत्वपूर्ण होती है। कई बार मौन अभिनय भी गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। नृत्य, मुद्राएँ, लड़ाई के दृश्य या यहाँ तक कि चेहरे के सूक्ष्म भाव भी कहानी को आगे बढ़ाते हैं। अभिनय का उद्देश्य दर्शकों को नाटक की दुनिया में खींचना और उन्हें भावनात्मक या बौद्धिक स्तर पर प्रभावित करना होता है। अभिनय नाटक की आत्मा है, जो लिखित शब्दों को सजीव अनुभव में बदल देता है। यह न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि समाज को प्रतिबिंबित करने और उसे चुनौती देने का एक शक्तिशाली उपकरण भी है।

अभिनय नाट्यतत्व का वह गुण है जो दर्शक को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस संबंध में नाटककार को नाटकों के रूप, आकार, दृश्यों की सजावट और उसके उचित संतुलन, परिधान, व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था आदि का पूरा ध्यान रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में लेखक की दृष्टि रंगशाला के विधि -विधानों की ओर विशेष रुप से होनी चाहिए इसी में नाटक की सफलता निहित है । इसकी श्रेष्ठता पात्रों के वाक्चातुर्य और अभिनय कला पर निर्भर है। मुख्य प्रकार से अभिनय ४ प्रकार का होता है।

१ - आंगिक अभिनय : शरीर से किया जाने वाला अभिनय,

२ - वाचिक अभिनय : संवाद का अभिनय

३ - आहार्य अभिनय : वेशभूषा, मेकअप, स्टेज विन्यास,

४ - सात्विक अभिनय : अंतरात्मा से किया गया अभिनय

7) भाषा - शैली :

नाटक की भाषा सरल, स्पष्ट , स्वाभाविक और सुबोध और अभिनेत्यता के गुणों से संपन्न होनी चाहिए, जिससे नाटक में प्रभाविकता का समावेश हो सके तथा दर्शक को क्लिष्ट भाषा के कारण बौद्धिक श्रम ना करना पड़े अन्यथा रस की अनुभूति में बाधा पहुंचेगी। अतः नाटक की भाषा सरल व स्पष्ट रूप में प्रवाहित होनी चाहिए।भाषा की दुरूहता पाठकों अथवा दर्शकों के लिए आनन्द में बाधक हो जाती है। भाषा यह पात्रानुकूल तथा परिवेश के उपयुक्त हो। यानी पात्रों के गुण, स्वभाव, शिक्षा-दीक्षा, सामाजिक हैसियत, मानसिक दशा के अनुकूल हो तथा जिस समय और समाज के वे पात्र हों उस समय और समाज के अनुरूप हो। दृश्य विधा के कारण नाटक में हमारा भाषा से जीवित साक्षात्कार होता है। भाषा के लिखित रूप के बजाए यहाँ उसके मौखिक रूप की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लिखित भाषा और मौखिक भाषा के स्वरूप और प्रभाव में अंतर होता है। किंतु नाटक में दोनों का समन्वय अपेक्षित होता है। जो बात पात्र कहे वह दर्शक को तुरंत संप्रेषणीय हो, इसलिए उसमें स्पष्टता नितांत अपेक्षित है। इसके साथ ही उसमें सार्थक सारगर्भिता भी हो जो दर्शकों को प्रभावित कर सके। यानी किसी भी गंभीर या महत्वपूर्ण बात को पूरी सहजता और स्पष्टता से इस प्रकार कहा जाए कि उसकी बोलचाल की लय समाप्त न हो।

किसी भी कृति में कथ्य को प्रस्तुत करने का ढंग शैली कहलाता है। कोई भी बात अपने आप में जितनी महत्वपूर्ण होती है उतना ही उसे प्रस्तुत करने का ढंग भी महत्वपूर्ण होता है। शैली में दो चीजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैः लेखक का अपना व्यक्तित्व और उसके द्वारा चुना गया विषय। विषय के अनुरूप शैली गंभीर विवेचन युक्त, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक या व्यंग्यात्मक होती है। शैली के कई भेद होते हैं। उदाहरण के लिए प्रतीकात्मक शैली, हास्यपरक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, विचारपरक शैली, मनोविश्लेषणपरक शैली, भावनात्मक शैली, प्रसन्न शैली, पांडित्यपूर्ण शैली, तर्कपूर्ण शैली, खंडन-मंडन की शैली, बोलचाल की शैली । एक ही कृति में स्थान-स्थान पर अलग-अलग शैलियाँ भी प्रयुक्त हो सकती हैं।

8) रस :

नाटक एक समग्र साहित्यिक विधा है जिसमें संवाद, अभिनय, भाव, मंचन आदि का समावेश होता है। इसका उद्देश्य दर्शकों को मनोरंजन प्रदान करना, साथ ही उनके हृदय में किसी भावना या अनुभूति को जाग्रत करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति 'रस' के माध्यम से होती है।

"रस आत्मा नाटस्य"
अर्थात् "रस ही नाटक की आत्मा है।"

रस वह भावात्मक स्थिति है जो दर्शकों के हृदय में उत्पन्न होकर उन्हें सौंदर्यबोध एवं आनन्द की अनुभूति कराता है। नाटक का मूल उद्देश्य दर्शकों के हृदय में किसी रस की अनुभूति कराना होता है। अभिनय, संवाद, गीत, नृत्य आदि सभी रस के संप्रेषण में सहायक होते हैं। रस के माध्यम से ही दर्शक अपने अनुभव को पात्र के अनुभव से जोड़ पाता है। रसानुभूति दर्शकों को मानसिक शुद्धि (कैथार्सिस) प्रदान करती है। नाटक में रस तत्व केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य के भावात्मक जीवन की गहराई को उजागर करने का माध्यम है। रस के बिना नाटक निर्जीव और प्रभावहीन हो जाता है। इसीलिए, रस को नाटक की आत्मा कहा गया है।

नाटक के प्रकार

नाटक कई तरह के होते हैं। कुछ नाटकों को आप किसी थिएटर अथवा रंगमंच पर प्रस्तुत होते देखते हैं। साथ ही कुछ नाटक आपने ऐसे भी देखे होंगे जिनके अभिनय के लिए किसी थिएटर या रंगशाला की जरूरत नहीं है। आपने रामलीला या रासलीला देखी होगी, नौटंकी, विदेसिया या तमाशा आदि देखे होंगे या नुक्कड़ नाटक देखे होंगे। इनकी प्रस्तुति किसी भी खुली जगह में हो जाती है। जरूरत हो तो मंच बना लिया जाता है नहीं तो लोग दायरा बना कर खड़े हो जाते हैं या बैठ जाते हैं और अभिनेता बीच में खड़े होकर अभिनय करते हैं। इसके अलावा आपने टेलीविजन पर नाटक देखे होंगे या रेडियो पर नाटक सुने होंगे। इस तरह के नाटकों के कई भेद होते हैं जैसे साहित्यिक नाटक और लोक नाटक। वस्तुतः इनके भेदों का निर्धारण कई आधारों पर किया जा सकता है।

1)स्वरूप के आधार पर नाटक के प्रकार :

I)सुखांत नाटक - सुखांत नाटक वह नाट्य रूप है, जिसमें कथा का अंत सुखद होता है, अर्थात नायक को संघर्षों के बाद सफलता, प्रेम, शांति या न्याय प्राप्त होता है और दर्शकों के मन में संतोष और प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है। इस नाटक में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। यह दर्शकों में विश्वास और प्रेरणा जगाता है। सुखांत नाटकों में सामाजिक सुधार, प्रेम, एकता, नैतिकता आदि पर बल होता है। यह नाटक समाज को एक सकारात्मक दिशा दिखाते है । सुखांत नाटक केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यों को भी मजबूत करता है।

II) दुखांत नाटक - दुखांत नाटक एक नाट्य शैली है जिसमें नायक या मुख्य पात्र का दुःखद अंत होता है। यह नाटक मानवीय पीड़ा, नियति के संघर्ष और नैतिक विफलता को गहराई से चित्रित करता है। नायक की पराजय, पतन या मृत्यु होती है। नायक प्रतिष्ठित होता है, परंतु उसकी कोई त्रुटि उसके पतन का कारण बनती है। दर्शकों में दया और भय की भावना जगाकर उनका शुद्धिकरण होता है। दुखांत नाटक मानव जीवन की कठोर वास्तविकताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है और दर्शकों को गहन चिंतन के लिए प्रेरित करता है।

III) दुःख-सुखांत नाटक : दुख-सुखांत नाटक वह नाटक होता है जिसमें कथा का आरंभ या मध्य भाग दुःखद घटनाओं, संघर्षों या विघ्नों से भरा होता है, लेकिन अंततः कथा का समापन सुखद रूप में होता है। ऐसे नाटकों में जीवन की यथार्थता और संघर्षों से उबरने की प्रेरणा दिखाई देती है।ऐसे नाटक हृदय को स्पर्श करते हैं। करुणा, आशा, और विजय की भावनाएँ एक साथ प्रकट होती हैं। अच्छाई की जीत और बुराई की हार होती है। दुख-सुखांत नाटक न केवल दर्शकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करता है, बल्कि जीवन के संघर्षों के बीच आशा और विश्वास की भावना भी जगाता है। यह नाट्य-प्रकार यथार्थ और आदर्श का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है।

IV) प्रहसनपरक नाटक : प्रहसन परक नाटक वह नाटक होता है जिसमें हास्य, विनोद, व्यंग्य, और विचित्र परिस्थितियों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन किया जाता है। इन नाटकों में पात्रों की गतिविधियाँ, भाषा या परिस्थितियाँ हास्यास्पद और अत्युक्तिपूर्ण होती हैं। समाज की कुरीतियाँ, पाखंड, भ्रष्टाचार, मूर्खता आदि पर हँसी के माध्यम से चोट।
संवाद छोटे, व्यंग्यात्मक व चुटीले होते हैं। दर्शकों को हँसाते हुए सामाजिक, राजनीतिक या नैतिक सच्चाइयों को उजागर किया जाता है । प्रहसन परक नाटक एक सशक्त नाट्य रूप है जो हल्के-फुल्के ढंग से गंभीर विषयों को प्रस्तुत करता है। यह न केवल दर्शकों को हँसाता है, बल्कि उन्हें सोचने पर भी मजबूर करता है।

2)विषय के आधार पर नाटक के प्रकार :

I) ऐतिहासिक नाटक :

ऐतिहासिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें इतिहास की घटनाओं, व्यक्तित्वों और युगीन परिस्थितियों को नाटकीय रूप से प्रस्तुत किया जाता है। यह नाटक इतिहास और कल्पना के सम्मिश्रण से बनता है, जिसमें तथ्यात्मक सत्य के साथ-साथ नाटकीय प्रभाव को भी महत्व दिया जाता है। ऐतिहासिक नाटकों में शासकों, युद्धों, सामाजिक परिवर्तनों और सांस्कृतिक संघर्षों को दर्शाया जाता है। ऐतिहासिक नाटक दर्शकों को अतीत की घटनाओं से जोड़कर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना जगाता है। ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नैतिक और सामाजिक सबक देता है।

II) पौराणिक नाटक :

पौराणिक नाटक वे नाटक होते हैं जिनका कथानक भारतीय पुराणों, धर्मग्रंथों, महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रंथों से लिया गया होता है। इनमें देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों, महान राजाओं और पौराणिक पात्रों की जीवन गाथाएँ, नैतिक शिक्षाएँ और धार्मिक संदेश नाटकीय रूप में प्रस्तुत किए जाते है। कथा रामायण, महाभारत, भागवत, शिव पुराण आदि से ली जाती है। सत्य, धर्म, कर्म, भक्ति, त्याग जैसे मूल्यों का प्रचार होता है। धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा को जीवित रखते हैं।नैतिक मूल्यों और आदर्श जीवन की प्रेरणा देते हैं। जनमानस में भक्ति और संस्कारों की भावना का विकास करते हैं। पौराणिक नाटक आध्यात्मिकता, नैतिकता और सांस्कृतिक गौरव को मंच पर सजीव करती है। यह केवल एक नाटकीय प्रस्तुति नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव होता है।

III)सामाजिक नाटक :

सामाजिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें समकालीन सामाजिक समस्याओं, मानवीय संबंधों, वर्ग संघर्ष और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर कथा प्रस्तुत की जाती है। इसका उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों और अन्याय के प्रति जागरूकता फैलाना होता है। नाटक में जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है। नाटक का केंद्र सामान्य

मनुष्य होता है, जो सामाजिक परिस्थितियों से जूझता है। सामाजिक नाटक न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह समाज का दर्पण भी है जो हमें हमारी कमियों और संभावनाओं से रूबरू कराता है।

IV) राजनीतिक नाटक : राजनीतिक नाटक वह नाट्य शैली है जो सत्ता, शासन व्यवस्था, राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक-राजनीतिक विचारधाराओं को केंद्र में रखती है। यह नाटक सत्ता के दुरुपयोग, जनता के संघर्ष और राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करता है। पूँजीवाद, लोकतंत्र आदि विचारधाराओं का टकराव । राजनीतिक व्यवस्था को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाना। कटाक्ष या गंभीर विश्लेषण के माध्यम से राजनीतिक स्थितियों को उजागर करना यह राजनीतिक नाटकों की विशेषता होती है।

V) धार्मिक नाटक : धार्मिक नाटक वह नाट्य शैली है जिसमें धार्मिक कथाओं, आस्थाओं, मिथकों और आध्यात्मिक विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य धार्मिक शिक्षा देना, आस्था को मजबूत करना या धर्म के सामाजिक प्रभाव को दर्शाना होता है। धर्म, नैतिकता और ईश्वर-भक्ति जैसे विषयों पर बल दिया जाता है । नाटक में धार्मिक संकेतों और प्रतीकों का उपयोग होता है । धार्मिक नाटकों में श्रद्धा, करुणा और शांत रस की प्रधानता होती है। यह नाटक धार्मिक आस्था और नैतिक मूल्यों को सुदृढ करता है।

3) शैली के आधार पर नाटक के प्रकार : हास्यपरक नाटक, व्यंग्यपरक नाटक, प्रतीकात्मक नाटक, मनोविश्लेषणपरक नाटक

4) अंकों के आधार पर नाटक के प्रकार : एकांकी नाटक, अनेकांकी नाटक।

5) पात्रों के आधार पर नाटक के प्रकार : एक पात्रीय नाटक, बहु पात्रीय नाटक

6) गद्य-पद्य के आधार पर नाटक के प्रकार : गद्य नाटक, पद्य नाटक, गीति नाटक (संगीत नाटक)

7) प्रयोगों के आधार पर नाटक के प्रकार : समस्या नाटक, नुक्कड़ नाटक, एब्सर्ड नाटक, नृत्य नाटक

8) प्रस्तुति माध्यम के आधार पर नाटक के प्रकार : रंगमंचीय नाटक, रेडियो नाटक, टेलीविजन नाटक

नाटकों के ये प्रकार उनकी विशिष्टताओं को स्पष्ट करने के लिए निर्धारित किए गए हैं। अतः यह नहीं समझना चाहिए कि कोई नाटक उपर्युक्त में से किसी एक ही प्रकार का हो सकता है। किसी भी नाटक में विभिन्न दृष्टियों से कई तरह की विशिष्टताएँ होती हैं, जैसे कोई नाटक राजनीतिक होने के साथ-साथ प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक भी हो सकता है। उसे समस्या नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है और नुक्कड़ के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है ।

नाटक और रंगमंच

→ नाटक यह हिंदी साहित्य की विधा है। नाटक और रंगमंच यह एक-दूसरे के अभिन्न अंग हैं। नाटक के बगैर रंगमंच अधूरा है और रंगमंच के बिना नाटक अधूरा है। नाटक लिखने से तैयारी करने तक और रंगमंच पर प्रस्तुती करने तक बहुत सारी तैयारी करनी पड़ती है।

(1) **कथावस्तु :—** नाटक रंगमंच पर अगर प्रस्तुत करना है तो उसकी कथा होनी चाहिए। कथा प्रस्तुत करने समय पात्र का सहारा लेकर प्रस्तुत की जाती है। नाटक के माध्यम से मुख्य कथा प्रस्तुत होनी चाहिए। नाटक की कथावस्तु ही आगे की घटना और कार्य को गति देती है। कथा का विषय किसी भी तरह का हो सकता है।

(2) **पात्र :—** नाटक की कथावस्तु पात्र के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। कथावस्तु के अनुरूप पात्र का चयन होना चाहिए। पात्र अगर कम होंगे तो कथावस्तु अच्छी तरह प्रस्तुत हो जाती है। नाटक में मुख्य पात्र के साथ गौण पात्र भी उसमें होते हैं। 'पताका' जो बीच-बीच में आता है। पकरी जो है एक बार आता है और बाद में नाटक में कभी नहीं आता।

(3) **संवाद :—** नाटक में संवाद होता है। संवादों के माध्यम से नाटक की कथावस्तु प्रस्तुत की जाती है। मगर संवाद छोटे-छोटे होंगे तो दर्शक वर्ग को नाटक समझ में आता है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(4) **અભિનય :—** નાટક માં અભિનય પણ હોના ચાહિએ। અભિનય જ્યાવસ્તુ ના અનુકુલ હોના ચાહિએ। અભિનય દેખને ઔર સુનને વાલે નાટક વાસ્તવિક લગના ચાહિએ ઐસા વાસ્તવિક ઔર અસલિયત સે અભિનય નાટક માં પ્રસ્તુત હોના ચાહિએ।

(5) **વેશભૂષા ઔર જશભૂષા :—** નાટક પ્રસ્તુત કરના હૈ તો વેશભૂષા ઔર જશભૂષા પાત્રો કી ઔર ઘટના કે અનુકુલ ઉસમેં હોના ચાહિએ। જૈસા - કિસાન કા ચિત્રણ દિખાના હૈ તો કિસાન ઐસા પ્રસ્તુત હોના ચાહિએ જો અસલિયત લગના ચાહિએ। ઇસકી વેશભૂષા ઔર જશભૂષા વૈસી હી હોની ચાહિએ।

(6) **અનિવાર્યતા :—** નાટકકાર, મંચન કરનેવાલા, દિગ્દર્શક, સ્ટેજવ્યવસ્થા, પાત્ર આદિ સબ ઉસમેં હોના ચાહિએ। ઐસે નયે નાટક રંગમંચ સાપેક્ષ હો જાતા હૈ।

(7) **સ્ટેજવ્યવસ્થા :—** નાટક રંગમંચ પર પ્રસ્તુત કરના હૈ તો સ્ટેજ ભી ભારી હોના ચાહિએ। સ્ટેજ ભારી હોગા તો ~~જ્યાવસ્તુ~~ નાટક અચ્છી તરહ સે પ્રદર્શિત હો જાતા હૈ। જિતના સુવિધા સે ભારી સ્ટેજ હોગા દર્શક ભી ઉતના જ્યાદા આયેગા ઔર અંતિમ સમય તક બૈઠેગા।

(8) **પ્રકાશવ્યવસ્થા :—** સ્ટેજ પર

Page No. : VEDHA
Date : / /

घटना चल रही है उसी के अनुरूप वेशभूषा प्रकाश की व्यवस्था उसमें होनी चाहिए।

उदा— चोरी चोरी जरना है तो रात उसके बाद में दृश्य होना चाहिए।

आदि घटना के अनुरूप प्रकाश की व्यवस्था उसमें होनी चाहिए।

(9) ध्वनि :—

नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत करना है तो आवाज की व्यवस्था उसमें करनी चाहिए। अंतिम छोर दर्शक तक नाटक के पात्र की आवाज जानी चाहिए। बाद में कभी कभार माईक भी होना चाहिए। पात्र भी घटना प्रस्तुत करते समय आवाज भी घटना के अनुरूप होनी चाहिए।

(10) उद्देश्य :—

कोई भी कार्य बिना उद्देश्य से होना नहीं है। नाटककार नाटक लिखते समय समाज का चित्रण साहित्य में करता है। उसके माध्यम से अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है समाज में जागृति की दृष्टि से भी नाटक लिखा जाता है और उसका मंचन होता है।

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि नाटक और रंगमंच ये एक दूसरे के पूरक है नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होता है तो यह दृक-श्राव्य माध्यम बन जाता है।

DAYANAND COLLEGE OF ARTS * LATUR 413531

1 'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक की कथावस्तु

→ शंकर शेष लिखित 'एक और द्रोणाचार्य' की कथावस्तु दो समानांतर कहानियों पर आधारित है। एक महाभारतकालीन द्रोणाचार्य की और दूसरी आज के शिक्षक प्रोफेसर अरविंद की। नाटक पौराणिक कथाओं के माध्यम से वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय और शिक्षक के असहाय होने की विडंबना को उजागर करता है। प्रोफेसर अरविंद अपने आदर्शों और सिद्धांतों से समझौता करने के दबाव में आज की व्यवस्था की कठपुतली बन जाता है। ठीक वैसे ही जैसे द्रोणाचार्य ने समझौता किया। 'एक और द्रोणाचार्य' की कथावस्तु निम्नलिखित है।

(1) दो भागों में कथा :—

'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक की कथा दो भागों में है। एक महाभारतकालीन द्रोणाचार्य की है यानी यह कथा एक तरफ पौराणिक है तो दूसरी तरफ यह कथा आधुनिक भी है। आधुनिक कथा में प्रोफेसर अरविंद के आदर्शों और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

(2) प्रो. अरविंद का परिवार :—

प्रोफेसर एक कॉलेज में प्रोफेसर है। उसकी पत्नी का नाम सविता है। उनका एक बेटा है जो प्रो. अरविंद के उसका मेडिकल कोर्स में पढ़ता है। उसको एक विधवा बहन है उसका महीना पन्द्रह भेजवाना पड़ता है। माँ कैन्सर से ग्रस्त है उसका अस्पताल में ट्रीटमेन्ट चल रहा है।

(3) राजकुमार नकल करना :—

प्रेसीडेन्ट का बच्चा उनके ही कॉलेज में पढ़ाई करता है। एक बार विद्यापीठ की परीक्षा चल रही है उस परीक्षा में नकल करता है। मगर वह नकल हाथ से गिर जाती है। वह हवा से उड़ती है। नकल किया हुआ राजकुमार उसमें फसता नहीं है नकल से बच जाता है।

(4) चंदु को रस्टीकेट :—

राजकुमार ने नकल की है मगर हाथ से नकल गीर जाती है। उसको चंदु उठा लेता है उसी वक्त वहां पे प्राचार्य आ जाते हैं। उसको प्रिंसीपल कमरे में ~~लेके~~ लेके जाते हैं। वहां पर प्रेसीडेन्ट होता है। चंदु को सही गलत कुछ भी पुछा नहीं जाता। उसकी ~~कम्पल~~ कम्पलेन विद्यापीठ में भिजवाई जाती है।

(5) चंदु का प्रयास :—

चंदु को नकल करने के कारण उसकी कम्पलेन विद्यापीठ में भिजवायी जाती है। यह सब प्रोफेसर अरविंद को बताने के लिए चंदु उनके पास आता है। वह सर से बताता है की यह मैंने नकल नहीं की है। सच-सचसर से बताता है।

(6) सला का हस्तक्षेप :—

राजकुमार ने नकल की है मगर इसमें चंदु फंस जाता है। राजकुमार को बचाने के लिए प्रेसीडेन्ट अरविंद को प्रिंसीपल का ऑफर दिया जाता है। अरविंद भी

GURUKUL Page No. Date

पत्नी और दोस्ती के आग्रह के कारण प्रिंसीपल का ऑफर स्विकार कर लेता है। चंदु को वह किसी भी तरह की मदत नहीं करता।

(7) अनुराधा की छेड़छाड़ :—

अनुराधा उनके ही कॉलेज की लड़की है। एक बार वह कॉलेज के पीछे किसी लड़के का इंतजार कर रही थी। उसी वक्त वहां पे राजकुमार आता है उसको छेड़छाड़ करता है। वहां पर प्रिंसीपल अरविंद कॉलेज के पीछे आ रहे होते हैं। वहां पर राजकुमार को वहां से निकाल देता है।

(8) अरविंद का घबराना :—

अनुराधा की छेड़छाड़ राजकुमार ने की है। यह सिर्फ मैंने अपने आंखों से देखा है। अगर अनुराधा कोर्ट में जाएगी तो इसलिए मैं सिर्फ एकमात्र गवाह हूं इस कारण प्रो. अरविंद बार-बार घबराता है। घर आके प्रेसीडेन्ट को फोन लगाता है।

(9) नैतिक मूल्य का पतन :—

चंदु का रस्टीकेट करना, अनुराधा की छेड़छाड़ करना, विमलेंदु की हत्या करना आदि सब घटनाएं देखकर लगता है। न्याय किसी को नहीं मिल रहा है। सब घटनाओं को देखकर लगता है नैतिक मूल्य को पतन हो रहा है।

(10) अनुराधा आत्महत्या करना :—

अनुराधा की छेड़छाड़ राजकुमार करता है। उसको न्याय कोई भी देता नहीं है। माता-पिता भी उसको सहकार्य नहीं करते हैं। अरविंद भी सहकार्य करनेवाला था मगर उसको नयी मुसीबत आती है वह भी उसको सहकार्य करता नहीं। अंत में अनुराधा आत्महत्या कर लेती है।

(11) प्रेसीडेन्ट की मृत्यु :—

प्रेसीडेन्ट को हाय ~~ब्लड~~ ब्लड प्रेशर होता है। डॉ. उनको खुली हवा में घुमने की सलाह देते हैं। प्रो. अरविंद रोज उनको घुमने टेकड़ी पर लेके जाता है। ऊपर से मेला दिखाने समय प्रेसीडेन्ट का पर फिसल जाता है वहां पर प्रेसीडेन्ट की मृत्यु हो जाती है।

(12) कोर्ट मॅटर :—

प्रेसीडेन्ट की मृत्यु हो जाने पर कोर्ट मॉटर शुरू हो जाता है। चंदु की गवाह ली जाती है। चंदु को वकील बहुत सारे प्रश्न पूछ लेता है। अंत में उनको पूछा जाता है मरते वक्त अरविंद का हाथ कहां पर था तो प्रेसीडेन्ट के कंधे पर। अंत में वकील ने कहा उन्होंने ही उनको धकेल दिया क्या? चंदु कहता है हाँ हो सकता है।

(13) संदिग्ध उत्तर :—

चंदु ने कोर्ट में उत्तर दिया की हो सकता है प्रो. अरविंद ने प्रेसीडेन्ट को धकेल दिया हो यह संदिग्ध उत्तर है।

दूसरी जगह द्रोणाचार्य बेटा महाभारत मर जाता है यह खबर द्रोणाचार्य को पता चलता है। कोई कहता है अश्वत्थामा मारा गया या अश्वत्थामा घोड़ा मर गया पता नहीं यह उत्तर युधिष्ठिर से

DAYANAND COLLEGE OF ARTS LATUR 413531
GURUKUL Page No
Date

मिलता है। यहा पर भी उत्तर संदिग्ध है।

(14) द्रोणाचार्य की तुलना :—

द्रोणाचार्य की तुलना अरविंद के साथ की है। दोनों भी शिक्षक है मगर अपना स्वार्थ दोनों भी देख लेते है। स्वार्थ के आगे किसी को भी मदत नहीं करते।

(15) अस्तित्व की समस्या :—

इस नाटक में हर एक पात्र अपने अस्तित्व के लिए प्रयासरत है। विमलेंदु, चंदु, अनुराधा, पहलावाला प्रिंसीपल, लता, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, अर्जुन, प्रेसीडेन्ट आदि सब पात्र अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए प्रयत्न करते है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक में महाभारत का द्रोणाचार्य जो है आधुनिकयुग में प्रो. अरविंद के रूप में आया है। इस नाटक में शिक्षा का व्यवसायीकरण किया गया है।

'एक और द्रोणाचार्य' चरित्र-चित्रण एवं पात्र

'एक और द्रोणाचार्य' शंकर शेष जी द्वारा रचित नाटक है। इस नाटक में दो कथाएँ चलती है। (1) आधुनिक कथा (2) पौराणिक कथा। दोनों कथाओं के पात्र अलग-अलग है। आधुनिक कथा के पात्र में (1) अरविंद (2) यदु (3) विमलेंदु (4) चंदु (5) प्राचार्य (6) राजकुमार (7) प्रेसीडन्ट (8) लीला (9) अनुराधा। तो पौराणिक पात्र में (1) द्रोणाचार्य (2) अर्जुन (3) अश्वत्थामा (4) कृपा आदि पौराणिक पात्र है। इन सभी पात्रों का विवेचन निम्नलिखित है —

(A) (1) **आधुनिक पात्र :—**

प्रोफेसर अरविंद :—

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में प्रोफेसर अरविंद अर्थशास्त्र के एक युवा और आदर्शवादी प्राध्यापक है। जो शिक्षा व्यवस्था के भ्रष्टाचार से जूझते है। वह न्यायप्रिय, संवेदनशील और अपने पिता की गलतियों पर सवाल उठानेवाले व्यक्ति है, जिनके कारण से आधुनिक शिक्षा तंत्र में व्याप्त अन्याय और अनैतिकता को उजागर किया गया है, जो पौराणिक द्रोणाचार्य की कथा के साथ समानांतर रूप से चलती है।

अरविंद एक योग्य और श्रेष्ठ और गरीब छात्र की बजाय एक अमीर और सिफारिशी छात्र को दाखिला मिलने का विरोध करता है, क्योंकि यह युद्ध-धर्म के खिलाफ है। वह अपने पिता के गलत कार्यों पर चुप नहीं रहते और अपनी असहमति को खुलकर व्यक्त करते है। अरविंद का चरित्र आधुनिक शिक्षा तंत्र के भ्रष्ट और अन्यायपूर्ण पहलुओं का प्रतीक है।

अरविंद का प्रिय चंदु है। परीक्षा में नकल करते समय ~~~~ चंदु का पकड़ा जाता है मगर नकल चंदु ने नहीं की थी। उसे फसाया जाता है। चंदु हर मौके सच बता देता है। अरविंद की इच्छा है की चंदु को

को सहकार्य करना चाहिए। प्रेसीडेन्ट अपने बेटे को बचाने के लिए अरविंद को प्रिंसीपल का ऑफर दिया जाता है। पन्ना, दास्त सभी उसको बताते है कि प्रिंसीपल स्विकार करना चाहिए। अरविंद प्रिंसीपल का पद स्विकार कर लेता है। चाहते हुए भी चंदू की मदत नहीं कर सकता। अनुराधा भी कॉलेज की लड़की है उसपर प्रेसीडेन्ट का बेटा राजकुमार छेड़छाड़ करता है। अरविंद ही इस घटना का गवाह है। अरविंद अनुराधा की मदत करना ही चाहता था मगर प्रेसीडेन्ट की ओर 15 हजार रुपय का गबन का आरोप अरविंद पर लगा दिया जाता है अपने को बचाने के लिए अनुराधा की भी मदत करना छोड़ देता है।

(2) लीला :— लीला अरविंद की पत्नी है। उनको एक बेटा है। पति अरविंद को बार-बार कहती है कि शादी होके 20 साल हो गए आपने कुछ भी नहीं किया। 'एक और द्रोणाचार्य' में लीला एक स्त्री पात्र है एक महत्वाकांक्षी पत्नी के चरित्र को दर्शाती है, जो अपने पति के सिद्धांतवादी स्वभाव और शिक्षा की दयनीय स्थिति के बीच संघर्ष को व्यक्त करती है।

(3) प्रेसिडेन्ट :— प्रेसिडेन्ट का पात्र एक व्यापारी-नेता है जो शिक्षा-व्यवस्था को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है और प्राचार्य की जगह ~~प्रो~~ प्रोफेसर अरविंद को बिठाने के लिए चंदू के पिता को धन देता है, जो शिक्षा को एक व्यापार के रूप में देखता है। यह पात्र आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनैतिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रेसिडेंट प्रोफेसर अरविंद को कॉलेज का प्रिंसीपल बनाने के एवज में कॉलेज से राजकुमार को निलंबित करने की प्रक्रिया बंद करने की बात करता है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

नाटक में वह कॉलेज को एक व्यापार की तरह चलाना है जहां पैसों और सत्ता के दम पर विषय लिए जाते है। नाटक के अंत में प्रेसिडेन्ट साहब को B.P. हो जाता है डाक्टर उनको खुली हवा में घुमने का सलाह देते है। प्रोफेसर अरविंद उनको खुली हवा में घुमने को ले जाते है। एक दिन ऊपर से मटका दिखता है ऊपर से उनको त्याग कुछ जरुरतमंदो जैसा दिखाई देता है वहां से देखते समय प्रेसीडेन्ट का पैर फिसल जाता है और प्रेसीडेन्ट की मृत्यु हो जाती है।

(4) **विमलेंदु :** विमलेंदु एक पात्र जो कि प्रेतात्मा की भूमिका निभाता है. ~~और उसकी आवाज~~ विमलेंदु नाटक में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से संबंधित एक पात्र है। यह एक प्रेतात्मा है जिसकी आवाज नाटक में घंटाचाम सेंदरे द्वारा दी गई है। नाटक में प्रोफेसर अरविंद के साथी रहे, प्रिंसिपल के साथ-साथ विमलेंदु भी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को दर्शाता है।

विमलेंदु कॉलेज में प्रोफेसर था राजकुमार की नजर पलकों से उसकी खुशी उसका सार छीन लेता है। विमलेंदु की पत्नी है पर उसके मर जाने के बाद वह विधवा होने के इधर-उधर नौकरी ढूंढने भटकती है मगर उसको कोई नौकरी नहीं देता। उसके 2 साल की बेटी भी है वह अपने पिता की याद करके रोती है। विमलेंदु की प्रेतात्मा सब देखके वह बहुत नाराज होता है।

पर वे अपना प्रिय दोस्त अरविंद को कहता है मैंने जो गलती की है वह गलती तुम मत करो मेरी गलती का मुझे एहसास हो चुका है।

(5) **प्रिंसीपल :** प्रिंसीपल भी इस नाटक का एक पात्र है। जो एक शिक्षक अरविंद के कालेज के अध्यक्ष पद पर जाके करता है और सभा व्यवस्था के दबाव के कारण अपने आदर्शों का समझौता करता है जैसा कि प्रोफेसर अरविंद और नाटक के अन्य

પોમાં ના વચ્ચ સંવાદ માં દર્શાવ્યા ગયા છે
નાટક માં પ્રિંસીપલ અરવિંદ ને કોલેજ ના
અધ્યક્ષ બનવા નો પ્રસ્તાવ દેતા છે જેના લીધે માં કોલેજ ના ટ્રસ્ટી રાજકુમાર ને ઈન્ટરવ્યુ કરવા ની પ્રક્રિયા
બંદ કરવી પડતી છે

આ પાત્ર ઉચ્ચ વ્યવસ્થા ની ઓર સત્તા ને દર્શાવતા
છે જે શિક્ષકો પર પોતાના સિદ્ધાંતો ને સમર્પિત કરવા
નો દબાવ કરતો છે. નાટક ના સંદર્ભ માં શિક્ષક
ની મજબૂરી ને દર્શાવે છે, જેને પોતાની આજીવિકા
અને સિદ્ધાંત ની વચ્ચ ચુકવા પડતા છે આમ
પ્રિંસીપલ ની ભૂમિકા આ દબાવ ને દર્શાવે છે.

(6) ચંદુ :— ચંદુ એ વૈકલ્પિક નામ છે પ્રોફેસર અરવિંદ
ના આદર્શ નામ પણ છે. ચંદુ એક મહત્વકાંક્ષી ઓર
ચતુર નામ ના રૂપ માં પ્રસ્તુત કિયા ગયા છે. પોતાના
તંત્ર માં વ્યાપ્ત ભ્રષ્ટાચાર ઓર રાજનીતિ ને ખત્મ કરવા
લગ જાતા છે. વહ અક્ષમતા ના પ્રતીક પણ છે.
આધુનિક પાત્ર ના રૂપ માં ઉસકી ભૂમિકા મહત્વપૂર્ણ
છે.

પરીક્ષા માં પ્રેસીડેન્ટ ના વિદ્યા નિબંધ ખરાબ
હોને વહ નકલ નીચે ગિરતી છે ઓર હવા સે ઉડતી
હે થોડા આગે. ચંદુ હાથ મેં લેતા હે ઉસે વક
પ્રિંસીપલ આતે હે. ઓર પ્રિંસીપલ ચેકિંગ માં
લગ જાતે હે વહાં પ્રેસીડેન્ટ હોતા હે. ચંદુ સૂત્ર
કુછ ન બતાનેવાલા બનતા હે મગર જાદા સુનતા નહીં
હે. ચંદુ એક દિન પ્રોફેસર અરવિંદ ના સત્ય
બતાતા હે અરવિંદ ચંદુ ની મદત કરના ભી
ચાહતા હે મગર પ્રેસીડેન્ટ રાજકુમાર ના વ્યાખ્યાન
ના લિએ અરવિંદ ના પ્રિંસીપલ ના ઓપ્શન દિયે
જાતે હે. ચંદુ, પત્ની-વિદ્યા, ઔર ચંદુ પ્રાચાર્ય
ને ખાસ કર અરવિંદ પ્રિંસીપલ ના નિર્ણય
સ્વીકાર કર લેતે હે. ચંદુ ને કોલેજ સે
રસ્ટીકેટ કિયા જાતા હે. ચંદુ પઢાઈ
છોડકે માર્કેટ મેં ઘુમતા રહતા હે.

(7) રાજકુમાર :—

रामकुमार कॉलेज में एक छात्र है। एक बार कॉलेज में परीक्षा होती है तो परीक्षा में नकल करता है। विमलेंदु नाम का प्राध्यापक नकल पकड़ता है। राजकुमार को विमलेंदु नाम के प्राध्यापक का गुस्सा आता है और गुण्डा के माध्यम ~~से~~ उसकी हत्या कर देता है।

वही घटना दो साल बाद ~~में~~ कॉलेज में घटित हो जाती है मगर नकल राजकुमार करता है और चंदु बेचारा उसमें फँस जाता है। चंदु को परीक्षा में नकल करने के कारण कॉलेज से एक्सपेल्ड किया जाता है। ~~सब~~ चंदु फँस जाता है और राजकुमार प्रेसीडेन्ट का लड़का है इसलिए वह छूट जाता है।

वही राजकुमार चंदु की प्रेयसी की छेड़छाड़ करता है। अनुराधा बेचारी न्याय माँगना चाहती है मगर उसे अपने परिवार से, अरविंद से उसे मदद नहीं मिलती। वह अनुराधा बुदबुदा कर रहती है। इसलिए राजकुमार जिम्मेदार होता है।

8) अनुराधा :—

अनुराधा कॉलेज की छात्रा है और वह चंदु की प्रेमिका है। सामान्य कुटुंब में रहनेवाली लड़की है। शिक्षा-व्यवस्था की शिकार बन जाती है। अनुराधा चंदु से प्रेम करती है। एक दिन राजकुमार उसकी छेड़छाड़ करता है वह न्याय माँगना चाहती है मगर माता-पिता उसको समझाने का प्रयास करते हैं। अरविंद सर की मदद माँग लेती है मगर सर पर ~~अ~~ अचानक दूसरी समस्या आने के कारण अरविंद उसको मदद नहीं पाता। प्रेसीडेन्ट की ओर से अनुराधा के पिता को 5 हजार रुपये दिए जाते हैं और रातोरात दूसरी जगह लेकर जाने का आयोजन अनुराधा के लिए चलता है। अनुराधा को किसी की सहकार्य न मिलने के कारण वह इस न्याय में अपनी जान देती है।

(B) પૌરાણિક પાત્ર :—

(1) દ્રોણાચાર્ય :—

પૌરાણિક પાત્ર રૂપ માં દ્રોણાચાર્ય કી મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા હૈ। કૌરવ઼ ઔર પાંચ પાંડવોં કે ગુરુ થે। અશ્વત્થામા કે પિતા થે ઔર કૃપા સે પત્નિ થી। દ્રોણાચાર્ય મહાભારત કા પ્રધાન પાત્ર હૈ। નાટકકાર ને પૌરાણિક દ્રોણાચાર્ય કે ચરિત્ર કો આધુનિક શિક્ષા જગત કી વિસંગતિયોં સે જોડા હૈ। ઇસ અર્થ મેં દ્રોણાચાર્ય કે સમાન હી શિક્ષા વ્યવસ્થા કે ભ્રષ્ટ ઔર સમઝૌતાવાદી સ્વરૂપ કો દિખાયા ગયા હૈ।

ઇસ નાટક મેં શંકર શેષજી ને દ્રોણાચાર્ય કો અરવિંદ કે જૈસા વિદ્વાન કા પ્રયાસ કિયા હૈ। સભી ગુરુ કા પ્રિય શિષ્ય બન જાતા હૈ મગર શિષ્ય પર સમસ્યા આતી હૈ તો ઉસકી કિસી ભી તરહ કી મદદ નહીં કરતા। દ્રોણાચાર્ય ભી વૈસા હી હૈ ઔર અરવિંદ ભી વૈસા હી હૈ।

(2) અશ્વત્થામા :—

અશ્વત્થામા ઇસ નાટક કા પૌરાણિક પાત્ર હૈ। જો દ્રોણાચાર્ય કા એકમાત્ર પુત્ર થા। નાટક મેં આધુનિક શિક્ષા-વ્યવસ્થા મેં ભ્રષ્ટાચાર કે વિરોધ મેં એક નૈતિક પ્રશ્ન કે રૂપ મેં પ્રસ્તુત કિયા ગયા હૈ। અશ્વત્થામા એક મહાન યોદ્ધા ઔર ધનુર્ધર થા। અશ્વત્થામા કા ચરિત્ર એક ઐસે યુવકવર્ગ કી ભાવના કા પ્રતીક હૈ જો વ્યવસ્થા સે અસંતુષ્ટ હૈ ઔર વ્યવસ્થા કે વિરુદ્ધ ખડા હોતા હૈ।

ઇસ પ્રકાર, એક ઓર દ્રોણાચાર્ય, નાટક મેં અશ્વત્થામા નામ એક વ્યક્તિ નહીં વલ્કિ એક નૈતિક પ્રતીક હૈ જો શિક્ષા પ્રાંગન મેં વ્યાપ્ત ભ્રષ્ટાચાર ઔર ગુરુ-શિષ્ય કે ટૂટે-ફૂટે રિશ્તોં કે દ્યોતક હૈ।

(3) અર્જુન :—

અર્જુન પાંચ-પાંડવોં મેં સે એક હૈ

इस नाटक में शंकर शेषजी ने अर्जुन को एक पौराणिक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। अर्जुन को धनुर्विद्या का ज्ञान है। एक द्रोणाचार्य ने एकलव्य से अंगूठा मांगा था तब अर्जुन ने उनसे कहा था गुरु यह बराबर नहीं है। मेरे से भारी उसका धनुर्विद्या आती है तो मैं उनसे और भारी धनुर्विद्या सीखने का प्रयास करता उनसे (एकलव्य) से अंगूठा मांगना गलत लगता है मुझे। अर्जुन ज्ञानी, भावनाशील है। नाटककार ने अर्जुन को एक ऐसे पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो शिक्षा-प्रणाली की विसंगतियों और चुनौतियों के बीच अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है।

(4) कृपा :—

'कृपा' यह एक पौराणिक पात्र है जो अश्वत्थामा की मां है और द्रोणाचार्य की पत्नी है। एक एक बार द्रोणाचार्य से समझाती है की अपने दुश्मन का बदला ऐसे नहीं लेना उनकी जातियों के लोगों से मित्रता करनी पड़ेगी, संघटन करना पड़ेगा, उनमें से खुद के शिष्य बनने चाहिए तब अपने अपमान का बदला से सकते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'एक और द्रोणाचार्य' इस शंकर शेष जी के नाटक में आधुनिक और पौराणिक पात्रों को लिया है। इस नाटक में दो समानांतर कथाएँ चलती है। दो कथाएँ एक दूसरे को पूरक है। आधुनिक कथा के आधुनिक पात्र है तो पौराणिक कथा के पौराणिक पात्र है। इन सभी पात्रों के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डालने का काम किया है।

Page No. : 1
Date : / /

'एक और द्रोणाचार्य' समस्याएँ और उद्देश्य

'एक और द्रोणाचार्य' यह शंकर शेषजी का नाटक है। इस नाटक का प्रमुख पात्र अरविंद है। इस नाटक में लीला, चंदु, अनुराधा, विमलेंदु, प्रेसीडेन्ट आदि पात्र है। इस नाटक में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा का व्यवसायीकरण, सत्ता का दबाव, शिक्षकों की उदासीनता, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

समस्या :—

(1) शिक्षा व्यवस्था का व्यवसायीकरण :—

संस्था का प्रेसीडेन्ट राजनेता भी है। उसकी संस्थाएं भी है। संस्था का पैसा राजनीति में लगाता है और राजनीति के पैसे से अनेक संस्थाएं निकालता है। अनेक संस्थाएं खोलना शिक्षा का व्यवसायीकरण करना ही है। ज्यादा संस्थाएं खोलने से शिक्षा का दर्जा गुण नीचे आते है। मगर यहां प्रेसीडेन्ट सत्ता से और पैसे से अनेक संस्था निकालता है।

(2) सत्ता का हस्तक्षेप :—

प्रेसीडेन्ट का बेटा राजकुमार कॉलेज में है। मगर राजकुमार का बर्ताव अच्छा नहीं है। परीक्षा में नकल करना, गुण्डागिरी करना, लड़कियों को छेड़छाड़ करना इस तरह कॉलेज में रहता है। राजकुमार ने नकल की है मगर चंदु फंस जाता है। चंदु जब अरविंद सर को बताता है तब अरविंद चंदु को मदत करने का आश्वासन देता है। मगर प्रेसीडेन्ट अरविंद को बताता है अप्लीकेशन वापस ले लो। अरविंद मानता नहीं बाद में प्रेसीडेन्ट प्रिंसीपल को ऑफर देता है। अरविंद का दोस्त, पत्नी लीला उनको बारबार प्रिंसीपल पद स्विकारने को कहते है। सत्ता का हस्तक्षेप होने के कारण अरविंद प्रिंसीपल बन जाता है। चंदु को 3 साल के लिए कॉलेज से निकाल दिया जाता

(3) शिक्षक वर्ग का पतन :—

'एक और द्रोणाचार्य' इस नाटक में शिक्षकवर्ग का पतन भी दिखाई देता है। विमलेंदु नामक सर प्रसीडेन्ट के बेटे की परीक्षा में नकल करते उसको पकड़ा जाता है। वह राजकुमार झुण्डों के माध्यम से विमलेंदु की हत्या की जाती है। विमलेंदु हत्या करना इसमें विमलेंदु की क्या गलती है? राजकुमार अपने पिता के बलबुते पर, सत्ता पर कॉलेज के प्राध्यापक का खून करता है। विमलेंदु का जीवन समाप्त हो गया ना। यानी शिक्षक वर्ग का पतन ही तो हो रहा है।

दूसरी ओर कॉलेज का प्रिंसीपल है चंदु राजकुमार नकल करता है। इसका परिणाम चंदु पर होता। चंदु ने नकल की है इसलिए चंदु को पकड़ा जाता है। चंदु अरविंद सर के सब बता देता है। राजकुमार के विरुद्ध में अरविंद सर प्राचार्य के पास ऑब्जेक्शन करता है। कॉलेज के प्रिंसीपल तो पिता है प्रसीडेन्ट के बच्चे के विरुद्ध में ऑब्जेक्शन आया है। वे प्राचार्य डर जाते हैं। ऑब्जेक्शन वापस करने के लिए अरविंद की पत्नी भीमा के पास जाता है, वह हमारे अन्नदाता है। उनके बेटे के विरुद्ध अक्षरशः बनी गलत बात है। अरविंद मानता नहीं है। प्रसीडेन्ट ही अरविंद को समझाते हैं।

प्रसीडेन्ट का कहना है हमारे कॉलेज के प्राचार्य अच्छा नहीं काम नहीं कर रहे हैं आपको प्रिंसीपल बनाना है। अपने बेटे को बचाने के लिए अरविंद को प्राचार्य का ऑफर दिया जाता है और उस प्रिंसीपल का निकाल दिया जाता है।

ऐसा होना भी शिक्षक वर्ग का पतन ही तो है। प्राचार्य सर को इसमें कुछ भी गलती नहीं है फिर भी उसको नौकरी से निकाल दिया जाता है।

(4) उदासीनता :— इस नाटक में बहुत पात्रों में उदासीनता दिखाई देती है। प्रेसीडेन्ट का बच्चा परीक्षा में नकल करता है उसके कारण चंदु को फसाया जाता है। चंदु भी इस घटना से परेशान हो जाता है। प्रेसीडेन्ट के बच्चे के विरुद्ध में ऑप्लीकेशन करने से कॉलेज का प्रिंसीपल भी परेशान हो जाता है। उनको मालुम है इस जवाब संस्था उनको मांगनेवाली है। लीला को जब पता चलता है तो वह भी अपने पति से बार-बार समझाने का प्रयत्न करती है। इस नाटक में चंदु, प्राचार्य, अरविंद, लीला, यदु, आदि सभी आधुनिक पात्र जो राजकुमार की हरकत के कारण उदासीन है।

(5) आदर्शवाद का संघर्ष :—

आदर्शवादी होने के बाद भी संघर्ष करना पड़ रहा है। चंदु आदर्शवादी छात्र है। नकल में उसको फसाया जाता है। आदर्शवादी होने बाद भी उसको कोई सहकार्य करता नहीं है। और उसको कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। कॉलेज से धक्के मारके निकाल दिया जाता है।

दूसरी तरफ अरविंद कॉलेज का आदर्श प्राध्यापक है। संस्था की ओर से दबाव डाल दिया जाता है। उसको प्रिंसीपल पद देके आदर्श छात्र फसाया जाता है। अरविंद प्राचार्य पद पर बैठ जाता है। मगर चंदु को मैंने मदत नहीं की है इसका दुःख उसको है। आदर्शवादी होने के बाद भी अरविंद सर को संघर्ष करना पड़ता है।

(6) समानांतर कथाओं का सामंजस्य :—

इस नाटक में दो कथाएं समानांतर रूप से चलती है। एक कथा आधुनिक है तो दूसरी कथा पौराणिक है।

आधुनिक कथा में कॉलेज का चित्रण किया गया है। प्रेसीडेन्ट के बेटे की नकल करना उसकी जगह चंदु को पकड़ना, चंदु को रस्टीकेट करना, बेटे को बचाने के लिए प्रेसीडेन्ट की ओर से अरविंद को प्रिंसीपल का ऑफर देना, पहले प्रिंसीपल को कॉलेज से अच्छा काम नहीं करता है इस दृष्टि से निकाल देना राजकुमार अनुराधा की छेड़छाड़ करना, अरविंद एक मात्र गवाह, लड़की ऑक्शन लेना, फिर से प्राचार्य अरविंद को प्रेसीडेन्ट का दबाव आना, 15 हजार का आरोप लगाना, अनुराधा आत्महत्या करना आदि विभिन्न घटनाएं आधुनिक कथा में आयी है।

पौराणिक कथा में द्रोणाचार्य के बेटे को गोरस पिने की इच्छा, द्रोणाचार्य के घर की स्थिती, द्रोणाचार्य कौरवों और पाड़वों को गुरु बनना, महाभारत होना, अश्वत्थामा मारा जाना, द्रौपदी भरी सभा में अपमान, द्रोणाचार्य की मृत्यु होना आदि घटनाएं यह पौराणिक कथा में आयी है।

उद्देश्य :—

शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियां, भ्रष्टाचार, पक्षपात, वर्तमान आदर्शवादी शिक्षक परिस्थिती से समझौता करना। शिक्षा व्यवस्था में समस्या होगी तो भावी पिढ़ी का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। शंकर शेष जी ने जिस उद्देश्य से ये नाटक लिखा है वह उद्देश्य निम्नलिखित है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(1) शिक्षा व्यवस्था की आलोचना :—

परीक्षा में नकल करना, नकल पकड़ा जाता है और दूसरा पकड़ा जाता है और इस कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। एक को प्रिंसीपल बनाने के लिए पहले को निकाल देना और दूसरा वाला प्रिंसीपल चुना भी नहीं जाता अपने वेट को बचाने के लिए उस प्रिंसीपल पद देना। एक विमलेंदु प्राध्यापक परीक्षा में नकल करते हुए बच्चे को पकड़ लेता है प्रेसीडेन्ट का बच्चा होने के कारण वह विमलेंदु से गुण्डों जैसा मारता है। इन सारी घटनाओं की आलोचना यहां की है।

(2) शिक्षक की त्रासदी :—

विमलेंदु की गलती न होने के कारण भी गुण्डों से उसकी आत्महत्या की जाती है। उसके मरने के बाद उसका परिवार परेशान हो जाता है। उसकी पत्नी नौकरी के लिए इधर-उधर जाती है मगर उसे कोई नौकरी नहीं देता। अरविंद को भी बहुत परेशानी होती है अपने प्रिय छात्र पर अन्याय हो चुका है। फिर भी अरविंद कुछ नहीं कर सकता। चंदु का किसी भी तरह का मन मस्त नहीं कर रहा है इस बात का दुःख अरविंद को होने लगता है यानी अरविंद को भी परेशानी होती है।

(3) नैतिकता का पतन :—

शिक्षक के रूप में शिक्षा क्षेत्र में उसका अपमान होना, उसका खून करना, किसी निर्दोष को अन्याय में फंसाना और उसका जिंदगी तबाह करना, अनुराधा को छेड़छाड़ करना, उसको न्याय न मिलना अंत में अन्याय न मिलने के कारण वह आत्महत्या करना,

आदि अनेक घटनाओं से यह पता चलता है की इस नाटक में शिक्षकों का पतन हो रहा है। शिक्षकों का नैतिक पतन होना यह शिक्षा व्यवस्था का बहुत बड़ा नुकसान होने जैसा है और शिक्षा पर कलंक लगने जैसा है।

(4) समाज को जगाना :—

कोई भी साहित्यकृती बगैर उद्देश्य से नहीं लिखी जाती। 'एक और द्रोणाचार्य' यह नाटक लिखने का उद्देश्य समाज में जाग्रती लाना था। कॉलेज में एक प्राध्यापक का खून किया जाता है तो बाकी स्टॉफ क्यों चुप बैठ जाता है। युवा वर्ग कॉलेज का आवाज क्यों नहीं उठाता? अनुराधा की छेड़छाड़ की जाती है सब कॉलेज अनुराधा को सहकार्य क्यों नहीं करता? जाग्रती लाने के उद्देश्य से शंकर शेष जीने यह नाटक लिखा है।

(5) मानवीय सत्य की खोज :—

विमलेंदु की हत्या की जाती है और समाज में उसके मरने के बाद अलग-अलग मरने के कारण फैल जाता है। कुछ कारण गलत भी फैल जाते हैं। ऐसे टाईम पे सही-गलत क्या है इसकी परख किए बिना अफवाह फैलाना नहीं चाहिए। किसी के चरित्र को कलंकित करना आपका हक्क नहीं है।

दूसरा इस नाटक का चंदु जो है उसे कॉलेज से रस्टीकेट किया जाता है। मगर कॉलेज में बाकी लोगों को मालूम नहीं है की नकल में चंदु को फसाया गया है। चंदु का चरित्र खराब हो रहा है। इसलिए चंदु को रस्टीकेट किया गया। इसकी सही जानकारी नहीं मिलती तब तक चंदु के चरित्र को कलंकित करने का अधिकार आपको नहीं है। यही सत्य की खोज करने के उद्देश्य से नाटक लिखा है।

अनुराधा का भी किस्सा इस तरह का है वह आत्महत्या कर लेती है मगर उसकी अफवाह अलग-अलग ही फैल जाती है। उसके चरित्र को कलंकित किया जाता है इसलिए सही-गलत की परख किए बिना किसी को कलंकित करना आपको हक नहीं है। इसी उद्देश्य से शंकर शेषजी ने नाटक लिखा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह नाटक शिक्षा व्यवस्था को उजागर करता है। शिक्षकों को नैतिक मूल्यों के विरुद्ध डंठे रहने के लिए प्रेरित करता है और अपनी पहचान बनाने का आह्वान करता है।

શંકર પુણતાંબેકર

હિંદી સાહિત્ય में एक व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध है। दूसरी पीढ़ी के व्यंग्यकारों में इनका विशिष्ट स्थान है।

① **जन्म** — 'कुंभराज' नामक कुल पाँच-छह हजार आबादी वाले देहात में रहनेवाले दलियनी महाराष्ट्र, ब्राह्मण परिवार में पुणतांबेकर का जन्म हुआ। कुछ पुणतांबेकर के जन्म तारीख के बारे में भी कोई निश्चित मत नहीं है। 21 मई -1924 आज भी वही चल रही है।

② **माता-पिता** :— शंकर पुणतांबेकर जी के पिता का नाम रघुनाथ राव थी। पुणतांबेकर की माताजी भी अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर सजग थी। वह स्वयं शिक्षित थी। लेकिन कहानी थी कि उनके बच्चे खूब पढ़-लिखे। समय आने पर बच्चों की पढ़ाई के लिए अपने कीमती हुए पैसे खर्च करने में भी पीछे नहीं हटती थी।

③ **शिक्षा** :— कुंभराज में नीसरी पास कर लेने के पश्चात जब पिताजी के साथ वे विदिशा में आ गए। विदिशा 'भेलसा' के नाम से जाना जाता था। भेलसा तथा उनका भाई भेलसा के एंग्लो वर्नाकुलर मिडिल स्कूल में दाखिल हो गए। 1933 - 1936 तक भेलसा विदिशा में ही रहे। मिडिल पास कर लेने के बाद आगे ग्वालियर चले गए और नौवीं कक्षा से लेकर बी.ए तक की शिक्षा ग्वालियर में ही पूरी की। आगरा में एम. एल. बी के लिए दो वर्ष तक रहे।

विदिशा में ही इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से टीचर कैंडिडेट के रूप में सन् 1950 में हिंदी विषय तथा सन् 1952 में इतिहास विषय से एम. ए किए। पी एच. डी (हिंदी) की उपाधि इन्होंने जबलपुर में 1970 में पूना विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

(4) पारिवारिक जीवन :—

शंकर पुणतांबेकर अपनी-पिता की पांचवी संतान थे। इनमें से एक की जन्म के साथ ही मृत्यु हो गई थी। अतः इन्हें चौथी संतान ही कहा जा सकता है। इन्हें तीन भाई थे और तीन बहनें थी और सभी इनसे छोटी थी।

पुणतांबेकर का विवाह इंदौर की मालती सोलस्कर से हुआ। मालती नाम बदलकर 'पुष्पलता' रखा गया। इन्हें तीन बेटे और एक बेटी है। एक बेटा अरविंद औरंगाबाद में भारतीय बैंक में अफसर है, ~~मंझला~~ दूसरा बेटा सुहास मुंबई में हिंदुस्थान कन्स्ट्रक्शन में जनरल मैनेजर अकाउन्ट्स है और छोटा मनोहर नासिक में सार्वजनिक निर्माण विभाग में डिप्टी इंजीनियर है। इन सभी के विवाह हो चुके हैं। इनकी चौथी संतान 'रश्मि' जलगाँव में ही इन्हीं के पास रहती है। रश्मि रुप-गुणवाली होकर भी ज्ञान के कारण नवाजशुदा है।

(5) पुरस्कार एवं सम्मान :—

(1) 'हरियाली और कौंदे', कृति पर इन्हें केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से 'अहिंदी भाषी साहित्यकार ~~पुरस्का~~ पुरस्कार 1976 में प्रदान किया गया।

(2) 1992 में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई का 'मुक्तिबोध पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

(3) मध्य प्रदेश साहित्य संघ, भोपाल का 'अक्षर साहित्य सम्मान' प्राप्त हुआ।

(4) 1994 में रंग चक्कलस द्वारा प्रदत्त 'चक्कलस पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

(5) 'आनंद ऋषि जी साहित्य पुरस्कार' दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद में मिला है।

6) कृतित्व :—

इनकी रचनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1) व्यंग्येतर रचनाएँ
2) व्यंग्य रचनाएँ

(A) व्यंग्येतर रचनाएँ :—

1) कल्याणी
2) सब से छोटा आदमी
3) कलंकरेखा
4) शीशे के टुकड़े
5) भूख हड़ताल
6) हरियाली और काँटे.

(B) व्यंग्य रचनाएँ :—

1) बचाओ मुझे डाक्टरों से बचाओ
2) रेड़ीमेड कपड़े
3) कैक्टस के काटे
4) एक मंत्री स्वर्गलोक में
5) बचाओ, मुझे कवियों से बचाओ
6) प्रेम विवाह.
7) अँगूर खट्टे नहीं है।
8) गिद्ध मंडरा रहा है।
9) कटआउट
10) पराजय की जुबली
11) मजी से पैदा भयो

अप्रकाशित रचनाएँ :—

पुणतांबेकर ने 106 ललित निबंध लिखे है, जिनका प्रकाशन तीन संग्रहों के रूप में किया जायेगा

(3) અરણ્ય ઝંડ
(3) બેચારા સૂરજ! અરે उसे तुम उगने दो।

(8) સંપાદન :—

1997 में श्रेष्ठ लघुकथाएँ नामक लघुकथा संग्रह का संपादन इन्होंने किया।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य को समृद्ध करनेवाले शंकर पुणतांबेकर एक सिद्धहस्त व्यंग्यकार है। 'व्यंग्य अमरज्योति' नामक ज्योति की रचना के कारण वे हिंदी साहित्याकाश में सदैव अमर ही रहेंगे।

Page No. Date: VEDHA

Q- 'रावण तुम बाहर आओ' नाटक की कथावस्तु

→ 'रावण तुम बाहर आओ' शंकर पुणतांबेकर जी का व्यंग्यात्मक नाटक है। इस नाटक में वीरसेन, रत्ना, कुमार, शीला, विक्रम, मोहन नरेंद्र, आनंद आदि पात्र उसमें आए हैं। इस नाटक का प्रमुख पात्र वीरसेन है उसके ही माध्यम से आज के राजनेता की खिल्ली उड़ाने का काम शंकर पुणतांबेकरजी ने किया है। इस नाटक का कथानक निम्नलिखित है —

(1) वीरसेन राजा :—

वीरसेन राजा है। यह राजा हमेशा अपना ही देखता रहता है। वह हमेशा कमरे में कैद रहता है। वह हमेशा अपना ही देखता रहता है। खुद की सोने की मूर्ति बनाना, खुद की सोने का सोने के लिए पलंग बनवाता है।

(2) समाज की समस्या :—

राजा जिस समाज में रहता है उस समाज में समाज के समस्या बहुत है। बाढ़ आके पूरी खेती तबाह हो चुकी है। भुखमरी के कारण लोगों की मृत्यु हो रही है। औषध न मिलने के कारण गरीब लोग दम तोड़ रहे हैं।

(3) सोने की मूर्ति :—

राजा विरसेन ने खुद की सोने की मूर्ति बनवायी है। राजा सभी से कहता है कि प्रजा ने मुझे दी है। मगर सोने की ऐसी मूर्ति बनवाना उनके कुमार और उनकी पत्नी रत्ना को भी अच्छा नहीं लगता। मूर्ति महान लोगों की बनवाई जाती है। आज हमारे समाज में जितने महापुरुष होके गए हैं, उनकी किसी की भी मूर्ति बनी नहीं है।

Page No. :
Date : / /

(4) मुलाकात :—

शीला हमेशा मुलाकात लेने के लिए राजा के घर आती है। कुमार से कहती है मैं आपकी मुलाकात लेने के लिए यहां आयी हूं। कुमार कहता है मैं क्या हिरो हूं क्या ? मैं इतिहास का अभ्यास करने वाला व्यक्ति हूं। मुलाकात लेना ही है तो इस सोने की मुर्ति का ले लो।

(5) सोने का पलंग :—

राजा वीरसेन की इच्छा है की सोने का पलंग चाहिए। मगर घरवाले लोगों को सोने का पलंग देखके खुशी होती नहीं है। विक्रम को एक बार राजा कहता है कि तुम मेरे पास सोने के पलंग पर बैठो। सोने का पलंग देखके मोहन, नरेंद्र और आनंद तिन्हों को बहुत आनंद होता है।

(6) पलंग चोरी :—

पलंग चोरी हो जाता है। राजा इधर-उधर देखता है। पमकार लोगों को कहां से पता चलता है यह पता नहीं चलता। शीला से विक्रम कहता है इज्जत के लिए इस प्रकरण को जितना दबाना है उतना दबा दो। और हमारा पलंग चोरी हुआ ही नहीं है क्योंकि हमारे पास सोने का ~~है~~ नहीं थी कुमार शीला से कहता है जितना हो सकता है उतना इस प्रकरण के जड़ तक जा लो आपको सबकुछ समझ में आ जाएगा।

(7) आवाज आना :—

राजा वीरसेन ने सोने का पलंग लिया था तब से राजा को बाहर से आवाज आती थी। 'रावण तुम बाहर आओ' यह आवाज बार-बार आती थी। राजा को रावण शब्द सुनाई देता था मगर मोहन, विक्रम और रत्ना को राम शब्द सुनाई देता है। एक बार वीरसेन कहता है जा मैं बाहर नहीं आऊँगा।

(8) गौरवग्रंथ :—

बाहर से बार-बार आवाज आने से राजा विक्रम को अपना गौरवग्रंथ दिखाता है। मेरा समाज ने गौरव किया है यह देख कितना बड़ा गौरवग्रंथ है और विद्यापीठ के कुलगुरु ने इस ग्रंथ का संपादन किया है। मैं अच्छा व्यक्ति हूँ इसलिए यह गौरवग्रंथ निकला है।

(9) पलंग पर कुमार की प्रतिक्रिया :—

कुमार अपने बापू से कहता है जितना हो सकता है उतना जल्दी इस पलंग को यहाँ से हटा दो। यह सोने का पलंग चोरी हो चुका है पर मुझे तो बापू पर शक है। इनका देश से विदेश पर भरोसा है। यहाँ का चोरी का माल दूसरे देशों में छुपाके रखता है। कुमार जो बापू का विरोध करता है तो शंकर पुणतांबेकर इस पात्र के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करते हैं।

(10) ज्योतिषी का आगमन :—

सोने का पलंग चोरी हो चुका है इसलिए ज्योतिषी को बुला लेता है। ज्योतिषी को लगता है की क्या चुनाव नजदीक आया है क्या? राज वीरसेन उनको कहते है कि मेरा पर्सनल प्रश्न है। मेरा सोने का पलंग चोरी हो चुका है। चोर का पता नहीं मिल रहा है।

(11) काला ड्रेस :—

चोर का पता लगाने के लिए ज्योतिषी राजा को काला ड्रेस देता है। और यह भी कहा जाता है कि यह ड्रेस जीस को सफेद लगेगा वह सच्चा देशभक्त होगा और जिसको यह ड्रेस काला लगेगा वह देशद्रोही होगा ऐसा ज्योतिषी राजा को बताता है। ज्योतिषी ने जैसा बताया था वैसा राजा करने लगता है।

(12) नरबलि यज्ञ :—

ज्योतिषी ने कहा है सोने का पलंग गया है तो राजगद्दी जाने का खतरा हुआ है। और ग्रहों की शांती करेंगे तो राजगद्दी रह सकती है। एक यज्ञ करना पड़ेगा और उस यज्ञ में एक नरबली देनी पड़ेगी। ज्योतिषी जो भी कहा राजा को सही लगने लगता है। राजा आगे की तैयारी करने के लिए सोचने लगता है। मुझे यज्ञ करना है और उसमें नरबली देना है।

(13) 4 लोगों की मुलाकात :—

मोहन नटवली की तैयारी करने लगता है। 4 लोगों को बुला लेता एक-एक की मुलाकात ली जाती है। पहला कहता है मेरा नटवली नहीं चलेगा मुझे जीना है। दूसरा कहता है कि तुम मेरी नटवली नहीं ले सकते तुम कौन होते हो - तुम क्या महान हो - दो कौड़ी का कहा कार - तिसरा कहता है मैं तुम्हारे राज्य में हूं इस बात का दुःख है। चौथा व्यक्ति राजा का बेटा कुमार होता है वह कहता है मैं इस अन्याय को सहते-सहते तंग आ चुका हूं इसलिए नटवली मेरी ले लो।

(14) वीरसेन की मृत्यु :—

ज्योतिषी ने राजा वीरसेन को कहा की मैं चोर का आधा नाम बतानेवाला हूं और यज्ञ का शुभमुहूर्त निकालना है इसलिए हम सीक्रेट रूम में जाएंगे। राजा कहता है चलो हम ऊपर जाएंगे। राजा को भी खुशी होती है की चोर का पता चलनेवाला है। ऊपर सिड़ीया चढ़ते समय राजा का पैर फिसल जाता है और वहां राजा वीरसेन की मृत्यु हो जाती है।

(15) राजा की मृत्यु पर प्रतिक्रिया :—

वीरसेन राजा की मृत्यु हो जाने पर एक लाथ मारता है और कहता है अच्छा हो गया मर गया एक कहता है वह उसकी हड्डियां नाली के डाल देंगे और विक्रम कहता है की

उनकी मृत्यु पर हम 3 दिन का हर्ष मनाएंगे मरने पर दुःख होता है मगर यहां हर किसी को खुशी हुई है।

(16) राजा विक्रम :—

राजा वीरसेन के मरने के बाद इलेक्शन होता है। इस चुनाव में विक्रम का 'चौंक' होता है। नरेंद्र-मोहन-आनंद का 'कोयला' चुनाव का चिन्ह होता है। विक्रम चुनाव जीत जाता है और राजा व राजा वीरसेन के राजगद्दी पर राजा होके बैठ जाता है।

(17) कुमार की मृत्यु :—

नाटककार शंकर पुणतांबेकर ने कुमार की मृत्यु का कोई कारण नहीं दिखाया है। एक बार मोहन कहता है 15 दिन हो गये अभी भी कुमार और शीला की लाशों का पता नहीं चल रहा है। विक्रम के आँखों में आंसू भी आते हैं। मोहन ने विक्रम से कहा आपने वहां उनको क्यों भिजवाया? तब विक्रम कहता है मुझे क्या पता वहां वैसा होनेवाला है। कुमार और शीला को नाव पलटने से मौत हो गई थी। अभी भी उनकी लाश किसी को नहीं मिल रही है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

निष्कर्षतः कहा जा सकता है यह शंकर पुणतांबेकर जीका व्यंग्यप्रधान नाटक है। इस नाटक का राजा अविवेकी, आलसी, स्वार्थी और भ्रष्टाचारी था वह हमेशा अपना ही सोचता रहता था।

क। 'रावण तुम बाहर आओ', शंकर पुणतांबेकर के नाटक के पात्र का चरित्र - चित्रण - या पात्र

→ 'रावण तुम बाहर आओ', यह शंकर पुणतांबेकर का नाटक है। यह नाटक व्यंग्यप्रधान है। इस नाटक में राजा वीरसेन, रत्ना, कुमार, विक्रम, मोहन, नरेंद्र, आनंद, शीला, युवती, I - II. III, आदि पात्र इस नाटक में आए हैं। इस नाटक में कुछ पात्र प्रमुख हैं तो कुछ पात्र गौण हैं। मुख्य पात्रों पर नाटक चलता है मगर बीच-बीच में कुछ पात्र प्रमुख पात्रों को गति देने के लिए गौण पात्र भी अपनी भूमिका निभाते हैं। इन सभी पात्रों का विवेचन निम्न-लिखित है —

(1) राजा वीरसेन :—

इस नाटक का प्रमुख पात्र राजा वीरसेन है। इस नाटक में राजा वीरसेन पर यह कथा चलती है। राजा एक बार खुद की सोने की मूर्ति बनवाता है। राजा सभी को बताता है की प्रजा ने मुझे प्रेम से दी है। प्रजा ने नहीं दी होती राजा ही खुद बनवाता है। उनका बेटा कुमार है। उसका पिता ने बनवाई हुई सोने की मूर्ति अच्छा नहीं लगता है। कहता है महापुरुषों की सोने की मूर्ति बनती है। महापुरुष में गांधी, आंबेडकर होक गये हैं आज तक उनकी सोने की मूर्ति नहीं बन पाई है। अच्छा महापुरुष की सोने की मूर्ति नहीं बनी। असली सोना वही लोग थे। राजा की इच्छा है की उसके पास सोने का पलंग सोने के लिए हो। राजा सोने का पलंग खरीद लाता है। राजा को खुशी हो जाती है। वहां मिठाई भी बांटी जाती है। कुछ दिन के बाद राजा का सोने का पलंग चोरी हो जाता है। राजा परेशान होता है। कहीं पर भी पलंग न मिलने से राजा ज्योतिषी को बुलाता है। ज्योतिषी राजा को एक काल कलर का इस देता है

देता है यह देख पहलवान सभी के पास जाना और उनसे
इस का कारण पुछना। जो भी लड़े इस कुबेर का
इस सपने कहेगा समझना वह दरभंगा है जिसमें
यह कुबेर खाता दिखेगा वह देश श्रेष्ठ है यह
समझना। राजा इस पहलवान सभी के पास जाता है।
ज्योतिषी ने राजा को यह भी कहा था
आपको एक यज्ञ करना है उस यज्ञ में नरबलि
करना है एक व्यक्ति का नरबली यज्ञ में देना
पड़ेगा। सोजा नरबलि की दृष्टि से अभागा को बुलाया
भी लेता है। बुलाने में पहले व्यक्ति को बुलाया जाता
है - उसे कहा जाता है तेरा नरबली बनाने वह व्यक्ति
कहता है मुझे जाना है। राजा कहता है तुझे क्यों जाना
है। तब वह पहलवान व्यक्ति कहता जो लाख
रुपये करके जीवन जीने है उनको बुलाने क्यों जाना
है। पहलवान ज्यादा बकबक कहता है उसे छोड़ दिया
जाता है।

दूसरे व्यक्ति को बुलाया जाता है वह व्यक्ति
नरबलि के बारे में कहता है आप क्या महापुरुष
है जो मेरा नरबलि लेने वाले है। आप कौन होते
है आपने तो दूसरे का व्याख्या है। आपको मुझे
भी पहचान नहीं है बार-बार बक-बक करने से
उसको भी छोड़ दिया जाता है। तीसरे व्यक्ति को
बुलाया जाता है उसे नाम पुछा जाता है तो
वह कहता है मेरा नाम विश्वनाथ है यह पुछा
मालूम। कहाँ रहता है - आपके राज्य में रहता
हूँ इस बात का दुःख है।

ज्योतिषी राजा को कहता है की मुझे
आपका यज्ञ का शुभमुहूर्त निकालना है और चोर
का आधा नाम भी बताना है इसलिए सोकर कुछ में
जाना पड़ेगा। राजा विश्वनाथ उसको ऊपर कमरे
में भेज जाता है। जाते समय राजा को चिट्ठी
चढ़ने समय पेड़ पर लिखने जाता है और वहाँ पर
राजा को मन्त्र है याती है।

राजा के बेटे का नाम कुमार और
उनकी पत्नी का नाम रत्ना थी। राजा भविष्य,
आलसी, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी था।

देता है यह देख पहलवान सभी के पास जाता और उनसे इस का नाम पुछता। जो भी लड़े इस कलह का रण सकेत कहेगा समझना वह क्षत्रिय है जिसको यह कलह नाता दिखेगा वह देश द्रोह है यह समझना। राजा इस पहलवान सभी के पास जाता है।

ज्योतिषी ने राजा को यह भी कहा था आपको एक यज्ञ करना है उस यज्ञ में नरबलि करना है एक व्यक्ति का नरबली यज्ञ में देना पड़ेगा। राजा नरबलि की दृष्टि से उचित व्यक्ति को बुलाने का निर्णय लेता है। बुलाकर में पहले व्यक्ति को बुलाया जाता है - उसे कहा जाता है तेरा नरबली बनाने है वह व्यक्ति कहता है मुझे जाना है। राजा कहता है तुझे क्यों जाना है। तब वह पहलवान व्यक्ति कहता - जो लाख रोपये। लाख जीवन जीने है उनको पुछो क्यों जाना है। पहलवान ज्यादा बलबल कहता है उसे छोड़ दिया जाता है।

दुसरे व्यक्ति को बुलाकर लाते है वह व्यक्ति नरबलि के बारे में कहता है आप कौन महापुरुष है जो मेरा नरबलि लेनेवाले है। आप कौन होते है आप तो टूंडा का व्यक्ति है। आपको तो कोई भी पहचान नहीं है बार-बार बक-बक करने से उसको भी छोड़ दिया जाता है। तीसरे व्यक्ति को बुलाया जाता है उसे नाम पुछा जाता है तो वह कहता है मेरा नाम वीरसेन है यह पुछा मालूम। कहाँ रहता है - आपके राज्य में रहता हूँ इस बात का दुःख है।

ज्योतिषी राजा को कहता है की मुझे आपके यज्ञ का शुभमुहूर्त निकालना है और चार का आधा नाम भी बताना है इसलिए सोकर दुर्ग में जाना पड़ेगा। राजा वीरसेन उसके ऊपर की कमर में लेके जाता है। जाते समय राजा की चिड़िया चढ़ते समय पेड़ पर फिसल जाता है और वहाँ पर राजा को मेलडी हो जाती है।

राजा के बेटे का नाम कुमार और उनकी पत्नी का नाम रत्ना थी। राजा भविष्य, भाभसी, स्वर्ग, मुख्तयारा वगैरे

(2) रत्ना :—

रत्ना राजा वीरसेन की पत्नी है। पति जब खुद की सोने की मूर्ति और सोने के लिए सोने का पलंग लेता है तब रत्ना को अच्छा नहीं लगता। राजा का काम जनता की सेवा करना है। रत्ना प्रगतिशीलवादी विचारधारा की है। एक बार शीला उनके घर मुलाकात लेने के लिए आती है तब शीला से कहती है मेरी मुलाकात लेने से क्या होनेवाला है मैं तो हमेशा कमरे में कैद रहती हूँ। पति जब था तब भी वह दुःखी थी पति अब मर गया है तो वह अब भी दुःखी है क्योंकि अब उसका सौभाग्य चला गया है। रत्ना के बेटे का नाम कुमार थी।

(3) कुमार :—

कुमार राजा वीरसेन का एकलौता बेटा है। कुमार की मां का नाम रत्ना थी। कुमार पिता की हमेशा गलतियां निकालता रहता था। पिता ने एक बार खुद की सोने की मूर्ति खरीद ली थी। पिता से कहता है आप क्या महापुरुष है जो सोने की मूर्ति बनवायी है। सच्चे महापुरुषों की सोने की मूर्ति नहीं बनती। सोने का पलंग जब दरबार में आता है तो कहता है जितना जल्दी हो सकता है उतना जल्दी यह वस्तु यहां से हटा दो।

सोने का पलंग चोरी होने पर पत्रकार लोग कुमार से कहते हैं आप लोगों का किस पर शक है तब कुमार कहता है मेरे ही बापू पर क्योंकि इनका विश्वास देश से ज्यादा विदेश पर है। यहां की संपत्ती दूसरे देशों में रखते हैं। उनकी क्या पलंग चोरी हुआ तो दूसरा लेते हैं पहलवाले विदेश में रखते हैं। कुमार का मित्र विक्रम है। वह भी उसे हमेशा मदद करता है।

बापू के मृत्यु के बाद विक्रम राजा बनता है। पिता मरने पर कुमार ने कहां था दुःख किसी को हुआ नहीं है और किसी का क्षति भर भी नुकसान हुआ नहीं है। दुःख हुआ है तो सिर्फ मेरी माँ का पहले बापू थे वह सौभाग्यवती थी फिर भी राजा

राजा की हरकतों के कारण दुःखी रहती थी। अब बापु गए तो वह उसका सौभाग्य चला गया इस कारण दुःखी है।

शीला के साथ कुमार घुमने को जाता है वहां जाने पर नाव पलटने से दोनों की वहां मृत्यु हो जाती है मगर डेढ़ बौड़ी अभी भी किसी को मिलती नहीं है 15 दिन हो गये जांच कर रहे हैं।

(4) विक्रम :—

विक्रम पहले विद्यापीठ में प्रोफेसर था। अब वह राजनीति में आया है। कुमार के साथ रहता है। राजा का पलंग चोरी हो जाने पर वह कहता है कि शीला जो पत्रकार है, उसको कहना जितना हो सकता है उतना इस ~~प्रकार~~ प्रकरण को दबाना पड़ेगा। बाहर जन-जन तक यह प्रकरण जाना नहीं चाहिए।

राजा वीरसेन की मृत्यु हो जाने पर विक्रम ने कहां ~~था~~ था अच्छा हो गया जो मर गया और उसने यह भी कहा था राज वीरसेन की मृत्यु पर हम उदिन का हर्ष मनाएंगे। राजा की मूर्ति के बाद चुनाव होता है। विक्रम का चिन्ह 'चौक' होता है। विक्रम राज वीरसेन की गद्दी पर राजा होके बैठ जाता है। कुमार और शीला की मृत्यु का समाचार आते ही विक्रम के आंखों में आंसु आते हैं।

(5) शीला :—

शीला एक पत्रकार है। राज वीरसेन के घर हमेशा आती है। पलंग चोरी होने पर सभी से प्रश्न पूछती है ~~च~~ शक किस पर है। शीला भी एक प्रगतिशील विचार धारा की लड़की है। कुमार परंपरा को तोड़ने का काम करता है तब शीला को कुमार का सब अच्छा लगने लगता है। सीने की मूर्ति पर कहती है इस सीने की मूर्ति को सुनाई नहीं देता होगा, कुछ दिखता नहीं होगा

Page No. : Date : / / VEDHA

કુમાર ને સાથે બહાર ઘુમવા જાતી હતી ત્યારે વધૂ ઉપરની નાવ પલટાઈ જાતી હતી અને વધૂ શીલા ની મૃત્યુ થઈ જાતી હતી

(6) જ્યોતિષી :— સોના નો પલંગ ચોરી થઈ ગયો હોય અને રાજા વારસને જ્યોતિષી નો ખુલાસો મળતો હોય તો તે રાજા ને એક જાલો ફેંસલો દેતો હોય અને કહેતો હોય કે આ ફેંસલો સભા સાથે જાણવો અને બહાર ઘુમતા જિસ ફેંસલા ને સમજે નહિ ના મળતા તે દેશમાં છે અગર ઉસનું જીવન જાય તો તે દુશ્મન છે એવા સમજવા

બાદમાં રાજા-રસ્તો કહેતો હોય પલંગ ચોરી થઈ ચુક્યો છે અને રાજગઢી માં ઘોરનો જાન ની સંભાવના છે ઇસલિએ નવરાત્રી ની શાંતી કરની પડશે અને યજ્ઞ માં નરબલિ દેવા પડશે રાજા ના ચોર ના ભાંધા ગામ બતાવતા હોય ત્યારે યજ્ઞ ના શુભમુહૂર્ત નિર્ણય હોય ઇસલિએ રાજા એક સીક્રેટ રુમ માં જાતા હોય

(7) મોહન :— રાજા ના દરબાર ના એક વ્યક્તિ છે તે હમેશા રાજા વારસને ની પ્રશંસા કરતા રહેતા હોય મોહન એક દેશભક્ત હોય ઉસમાં ભિમ નરેંદ્ર અને આનંદ હોય રાજા ની નરબલિ દેવા ના યજ્ઞમાં ઇસલિએ પૂજા ના ૩ ત્યાગ : ના બુલાવા આતા હોય રાજા મરણ પર ચુનાવ કરિએ ચઢી જાતા હોય અંત માં ચુનાવ માં હાર થઈ જાતી હોય

(8) આનંદ :— આનંદ એ રાજા ના દરબાર ના વ્યક્તિ છે તે એ દેશભક્ત હોય મોહન અને નરેંદ્ર ઉસના દોસ્ત હોય રાજા ના પલંગ ચોરી થવા પર દુઃખ હોય રાજા ને ફેંસલા ના

प्रशंसा करता है। राजा मरने पर कहा था अच्छा हो गया मर गया अब हम सुकून से रह पाएंगे।

(9) नरेंद्र :—

नरेंद्र राजा के दरबार का एक व्यक्ति है। वह भी एक देशभक्त है। हमेशा हाथ में कटार लेके घूमता रहता है। और कहता है मेरी कटार सबसे ज्यादा तेज है। मैं राजा बनूंगा। नरेंद्र - मोहन और आनंद तिनों मित्र है तिनों मैत्र करते है कि राजा वीरसेन को हम मारेंगे और तिन्हों में से एक राजा होगा। राजा वीरसेन की मृत्यु के बाद नरेंद्र ने कहा था उनकी हड्डियाँ नाली में फेंक देंगे।

(10) पिंजरे की औरत :—

राजा जब भी बोलता था तब वह हमेशा राजा पर व्यंग्य करती रहती थी। राजा ने जब सोने का पलंग खरीदा था तब वह पिंजरे की औरत कहती है खुद का देख सोने के पलंग पर सोने का जनता जाएँ ~~वा~~ भाड़ में।

(11) युवती :—

प्रजा में से एक युवती है वह विधवा है। वह खेती करके अपना जीवन बीता लेती है। एक दिन सेठ ने उसके जमीन पर कब्जा कर ~~लिया~~ लिया है इसलिए राजा के पास मदत मांगने के लिए आती है। मगर उसको राजा किसी भी तरह की मदत नहीं करता। वह वहां से गुस्से से चली जाती है।

(12) युवती का बेटा :—

युवती को बेटा है। वह राजा के पास मदद मांगने के लिए आयी है। वहां सोने का पलंग आया है सब मिठाई खा रहे हैं। उसी वक्त वह बेटा माँ से कहता है माँ मुझे भूख लगी है। 3 लोग उसे खाने की मिठाई देते हैं तब वह लड़का कहता है माँ यह रोटी नहीं है तब वह युवती कहती है यह अमीरों की रोटी है।

(13) **भामाशाह :—** जब राजा सोने का पलंग खरीद लेता है तब कुमार को बहुत बुरा लगता है। ऐसे समाज में आज समाजसुधारकों की जरूरत होती है। कम से कम तुम भामाशाह तो होना चाहिए। अच्छा हुआ तुम भामाशाह आए हो। कुमार विचार करता है तो उसी वक्त वहां पे भामाशाह आते हैं। आज समाज में जो समस्या है उसी समस्या के लिए समाजसुधारकों ने करना चाहिए। भामाशाह आता है और कुछ बात करके वहां से जाता है। कुछ समय के बाद चलता है की विक्रम से पता चलता है कि वह भामाशाह नहीं था वह तो ऐसे ही आवारा व्यक्ति था।

(14) **I ला व्यक्ति :—** राजा का सोने का पलंग चोरी हो चुका है और ज्योतिषी ने उनको कहा है यज्ञ करना है उसमें नरबली देना है। इसलिए मोहल्ला प्रजा में से 4 लोगों को लेके आता है। उसमें पहला व्यक्ति आया है। राजा उससे उसने पहना हुआ ड्रेस का रंग पूछता है और उसे कहां जाता है तेरी नरबली लेना है। तब वह व्यक्ति कहता है मुझे जीना है तुम मेरी नरबली नहीं ले सकता और कहता है मुझे जीना है। तब राजा उसे कहता है तुझे क्यों जीना है रे। तब I व्यक्ति कहता है जो लोगों का शोषण करके जीते हैं उनसे पूछो क्यों जीना है। वह व्यक्ति बार-बार बक-बक करता है

इसलिए राजा उसे छोड़ देता है।

(15) II व्यक्ति :— दूसरा व्यक्ति वहां राजा के दरबार में आता है। राजा उसको प्रश्न पूछता है मेरे इस कलर का नाम बता। तब वह कहता है किस दृष्टि से उलट दूं मैं। राजा उसको कहता है तेरी नरबली लेना है। तब वह कहता है तू क्या शिवाजीर महाराज, आंबेडकर है क्या। तू कौन होता है मेरी नरबली लेनेवाला। दो कौड़ी का कहां का। सृज पर जाकर अपना परिचय दे तेरी पहचान कुछ भी नहीं है। बार-बार बक-बक करने से राजा उसको छोड़ देता है।

(16) III व्यक्ति :— तिसरा व्यक्ति भी राजा के दरबार में आता है। राजा उनसे प्रश्न पूछता है तेरा नाम क्या है? तब वह कहता है वीरसेन नहीं है यह पक्का मालूम है। कहाँ रहता है? तेरे राज्य में रहता हूं इसी बात का दुःख है। मैं तेरी नरबली लेनेवाला हूं। तब वह कहता है मैं तेरे द्वार पर रोटी मांगने के लिए आया था तब आपने मुझे द्वारा से धक्के मारके भिजवाया था। राजा मोहन से कहता है इस कोठरी में बंद करो और उसे फटकारों मारो हमें इसकी ही बलि लेना है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की इस 'रावण तुम बाहर आओ' इस नाटक में कुछ पात्र गौण आए है तो कुछ पात्र प्रमुख आए है। इन सभी पात्रों के आधार पर शंकर पुणतांबेकर ने ~~नाटक~~ व्यंग्यप्रधान नाटक लिखा है। इस नाटक के माध्यम से और कुछ पात्रों के माध्यम से ~~राज~~ आज की राजनीति दिखाने का काम किया है।

इसलिए राजा उसे छोड़ देता है।

(15) II व्यक्ति :—

2 रा व्यक्ति वहां राजा के दरबार में आता है। राजा उसको प्रश्न पूछता है मेरे इस कलर का नाम बता। तब वह कहता है किस दृष्टि से उत्तर दूं मैं। राजा उसको कहता है तेरी नरबली लेना है। तब वह कहता है तू क्या शिवाजी महाराज, आंबेडकर है क्या। तू कौन होता है मेरी नरबली लेनेवाला। दो कौड़ी का कहां का। सृज पर जाकर अपना परिचय दे तेरी पहचान कुछ भी नहीं है। बार-बार बक-बक करने से राजा उसे छोड़ देता है।

(16) III व्यक्ति :—

तिसरा व्यक्ति भी राजा के दरबार में आता है। राजा उनसे प्रश्न पूछता है तेरा नाम क्या है? तब वह कहता है वीरसेन नहीं है यह पक्का मालूम है। कहाँ रहता है तेरे राज्य में रहता हूं इसी बात का दुःख है। मैं तेरी नरबली लेनेवाला हूं। तब वह कहता है मैं तेरे द्वार पर रोटी मांगने के लिए आया था तब आपने मुझे द्वारा से धक्के मारके भिजवाया था। राजा मोहन से कहता है इस कोठरी में बंद करो और उसे फटकारा मारो हमें इसकी ही बलि लेना है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है की इस 'रावण तुम बाहर आओ' इस नाटक में कुछ पात्र गौण आए है तो कुछ पात्र प्रमुख आए है। इन सभी पात्रों के आधार पर शंकर पुणतांबेकर ने ~~नाटक~~ व्यंग्यप्रधान नाटक लिखा है। इस नाटक के माध्यम से और कुछ पात्रों के माध्यम से ~~राज~~ आज की राजनीति दिखाने का काम किया है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

'रावण तुम वाहर आओ' इस नाटक की समस्या और उद्देश्य -

→ डॉ. शंकर पुणतांबेकर के नाटक 'रावण तुम वाहर आओ' का उद्देश्य और समस्या स्वातन्त्र्योत्तर भारत की मुख्य सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करना और उसकी समस्याओं को उजागर करना है। नाटक समझौतावादी व्यवस्था के मुखौटों को उतारता है, जिसमें भ्रष्टाचार, उत्तरदायित्वहीन राजनीति, जाति व धर्म पर आधारित वर्गीय और आर्थिक संघर्ष प्रमुख समस्याएं हैं, जिनसे आम आदमी पीड़ित है।

नाटक का उद्देश्य :—

(1) **भ्रष्टाचार का पर्दाफाश :—**

नाटक का मुख्य उद्देश्य शासन और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को सामने लाना और जनमानस में फैली माहभंग की भावना को व्यक्त करना है। नाटक में सुमार के माध्यम से इसका प्रयास किया है।

(2) **व्यवस्था पर व्यंग्य :—**

लेखक अपनी व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करके समझौतावादी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की असफलता और खोखलेपन को उजागर करते हैं।

(3) **जनमानस की वेदना :—**

Page No. : VEDHA
Date : / /

नाटक में डॉ. पुणतांबेकर ने जनमानस की वेदना, सपनों के कुचले जाने और मोहभंग को दर्शाया है, जिससे वे अपने समय के जन भाष्यकार बन जाते हैं। राजा के दरबार में एक युवती आती है। राजा वीरसेन से उसी समस्या कहती है - हुजूर रोड ने मेरी जमीन पर कब्जा कर लिया है। अब मेरा जीवन जीने का सहारा छीन गया है। बार-बार राजा से कहती है मगर राजा का ~~उसका~~ उसकी बात का प्रभाव पड़ता नहीं है। समाज में भुखमरी है, बीमारी का दवा नहीं मिल रही है, समाज में बाढ़ आ चुकी आदि अनेक समस्या है मगर राजा किसी भी समस्या का समाधान करने का प्रयास करता नहीं है।

(4) राजनीति आज की :-

आज हमारे यहां राजनीति किस तरह चल रही है उसका उदाहरण राजा वीरसेन के माध्यम से ~~[illegible]~~ दिखाया है। राजा वीरसेन राजा ~~पर~~ होने पर समाज की किसी भी समस्या को ~~[illegible]~~ समाधान करने का प्रयास नहीं करता। वो खुद का ही स्वार्थ देख लेता है। खुद की सोने की मुर्ती बनाना, खुद को सोने के लिए सोने का पलंग बनवाना सब अपना ही देख लेता है और ऊपर से कहता है जनता ने मुझे प्रेम से दिया है।

आज के राजनेता भी ऐसे ही कहते हैं। खुद का स्वार्थ देख लेते हैं। ~~[illegible]~~ जनता की समस्या का उनको कुछ भी लेना-देना नहीं है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(5) जैसा कर्म वैसा फल :—

मनुष्य जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। राजा वीरसेन ने सोने का पलंग खुद को सोने के लिए बनवाया था मगर वह जनता का पैसा वसूल करके बनवाया था। चोरी से पलंग आया था आज चोरी से चला गया है। मनुष्य जैसा करता है वैसा कर्म उसके पास आता है। यह राजा को देखने के बाद दिखाई देता है। यज्ञ के लिए नरबलि दूसरों की लेना चाहता था अब उसकी ही मृत्यु हो चुकी।

नाटक की समस्या :—

(1) भ्रष्टाचार और स्वार्थ :—

नाटक में दिखाया गया है की भ्रष्टाचार किस तरह होता है। राजा वीरसेन जनता के पैसे से खुद की सोने की मूर्ति बनवाता है और खुद को सोने के लिए सोने का पलंग बनवाता है। राजा होकर होकर भी भ्रष्टाचार है और उसमें सिर्फ उसका स्वार्थ है।

(2) उत्तर दायित्वहीन राजनीति :—

स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में जनहित की अनदेखी और स्वार्थ की भावना प्रमुख समस्या है, जो जनता के सपनों को साकार होने से रोकती है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

राजा होनेपर समाज में बाढ़ आयी है, आर्थिक विषमता चल रही है ऐसे सामाजिक वातावरण में राजा ने कुछ ना कुछ तो मदत करना चाहिए मगर राजावीरसेन कुछ भी मदत नहीं करता खुद का स्वार्थ देख लेता है।

(3) जातिभेद और धर्मभेद :—

रावण तुम बाहर आओ इस नाटक में जातिभेद है। यज्ञ के लिए नरबली चाहिए था उसमें III नं. व्यक्ति उसमें कहता है मैं आपके द्वार पर रोटी मांगने के लिए आया थी मगर आप लोगों ने मुझे यहां से निकाल दिया था और दरवाजा बंद किया थी आपने यह सब जाति और धर्म के आधार पर किया था।

(4) आर्थिक संघर्ष :—

इस नाटक में आर्थिक संघर्ष दिखाया गया है। राजा जनता की पैसे से सोने की मूर्ति बनवाता है। सोने का पलंग बनवाता है। मगर जनता दैनंदिन चीजें खरीदने के लिए परेशान है। समाज में बाढ़ आके गयी है। समाज खाने को तरस रहा है। युवती की जमीन पर सेठ ने कब्जा कर लिया है। राजा उस युवती को किसी भी तरह की मदत करता नहीं है। युवती गुस्से से चली जाती है।

Page No. : VEDHA
Date : / /

(5) संस्कृति और मूल्यों का ह्रास :—

समाज के दीन-हीन व्यक्ति को मदत करना चाहिए, किसी को फंसाना नहीं चाहिए, दयालु स्वभाव होना चाहिए यह हमारी संस्कृति के लक्षण है। गरीबों की रोटी छीनना, खुद का स्वार्थ देखना, अपमान करना यह सब मूल्यों के ह्रास के लक्षण दिखाई देते है।

रावण तुम बाहर आओ इस नाटक में संस्कृति का नाश हो रहा है और मूल्यों का भी ह्रास हो रहा है। यह इस नाटक की महत्वपूर्ण समस्या है जिसके कारण समाज का और राजा वीरसेन का पतन हो चुका है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह 'रावण तुम बाहर आओ' यह डॉ. शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्यप्रधान नाटक है। इस नाटक से हम कुछ भी सीखने को नहीं मिलता है। इस नाटक ही समस्याप्रधान है। इस नाटक में जो समस्या है वह आज हमारे समाज में दिखाई देती है।

DAYA... ...UR 413531 ...OF ARTS

भारतेंदु हरिश्चंद्र - सामान्य परिचय

(A) भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का जीवन परिचय :—

(1) जन्म :— भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। उनके पिता गोपालचंद्र एक अच्छे कवि थे और गिरधरदास उपनाम से कविता लिखा करते थे। ~~18~~ 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 7 वर्ष की होगी। भारतेंदु का कृतित्व साक्ष्य है कि उनकी आँखें एक बार खुली तो बंद नहीं हुई। उनके पूर्वज अंग्रेज-भक्त थे। उनकी ही कृपा से धनवान हुये थे। हरिश्चंद्र 5 वर्ष के थे तो उनकी माँ की मृत्यु और 10 वर्ष के थे तो उनके पिता का देहांत हो चुका।

(2) शिक्षा :— इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के सुख से वंचित हो गये। विमाता ने खूब सताया। बचपन का सुख नहीं मिला। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतंत्र रूप से देखने-सोचने-समझने की आदत का विकास होने लगा। पढ़ाई की विषय-वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वीन्स कॉलेज, बनारस में प्रवेश लिया, तीन-चार वर्षों तक कॉलेज आते-जाते रहे पर यहाँ से मन बार-बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी, ग्रहण क्षमता ~~अद्भुत~~ अद्भुत। इसलिए परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढ़े-लिखे और प्रसिद्ध लेखक राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद थे। भारतेंदु शिष्य भाव से उनके यहाँ जाते। उन्हीं से अंग्रेजी सीखी।

GURUKUL Page No. Date

स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषाएँ सीखी थी।
उनको काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत में उपहार में मिली थी। 5 वर्ष की अवस्था में उन्होंने दोहा लिखा था।

(3) मृत्यु :—
1885 में अल्पायु में ही मृत्यु हुई.

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) मौलिक नाटक :—
① वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
② प्रेम जोगिनी
③ भारत-दुर्दशा
④ चंद्रावली
⑤ विषस्य-विषमौषधम
⑥ अंधेर-नगरी
⑦ नीलदेवी
⑧ सतीप्रताप

(2) निबंध-संग्रह :—
① नाटक
② जातीय संगीत
③ कश्मीर कुसुम
④ जातीय कुसुम
⑤ संगीत सार
⑥ हिंदी भाषा

(3) काव्य :—
① प्रेम मालिका
② प्रेम सरोवर
③ प्रेम सरोवर
④ प्रेम-माधुरी
⑤ प्रेम-तरंग
⑥ दैवी

(7) दार्जीलिंग
(8) तन्मय - दीक्षा
(9) वसंत
(10) सुमनांजलि

(4) कहानी :—

(1) अद्भुत अपूर्व स्वप्न

(5) यात्रा वृत्तांत :—

(1) सरयूपार की यात्रा
(2) भटिनडा

(6) आत्मकथा :—

एक कहानी - कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

(7) उपन्यास :—

(1) पूर्णप्रकाश
(2) चंद्रप्रभा

मृत्यु - 1885 में हुई

A) जयशंकर प्रसाद - सामान्य परिचय

जीवन परिचय :—

(1) जन्म —

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी (काशी) में हुआ था वे एक महान कवि, नाटककार, उपन्यासकार और निबंधकार थे, जिन्हें हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रवर्तकों में से एक माना जाता है। उनके पिता का नाम देवीप्रसाद था। बचपन में पिता की मृत्यु हो जाने पर उनकी शिक्षा। घर पर ही हुई

(2) शिक्षा :—

प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा। काशी के क्वीस कॉलेज में हुई थी परंतु यह शिक्षा। अत्यंत कालीक था। इनके दर्जे में वहां शिक्षा। आरंभ हुई थी। सातवें दर्जे तक ही वे वहां पढ़ पाये। उनकी शिक्षा। का व्यापक प्रबंध घर पर ही किया गया। इन्होंने हिंदी और संस्कृत का अध्ययन इन्होंने किया। प्रसादजी के प्रारंभिक शिक्षण मोहिनीलाल गुप्त थे। इन्होंने वेद, इतिहास, पुराण। तथा साहित्यशास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था।

(3) विवाह :—

प्रसाद जी का पहला विवाह 1909 विंध्यवासिनी देवी के साथ हुआ था उनकी पत्नी को क्षयरोग था। सन 1916 में विंध्यवासिनी देवी का निधन हो गया। उसी समय से उनके घर में क्षयरोग ने किटाणु प्रवेश कर गये थे। 1917 में सरस्वती देवी के साथ दूसरा विवाह हुआ। दूसरा विवाह होने पर उनकी पहली पत्नी की साड़ियाँ आदि को उनकी द्वितीय पत्नी ने भी पहना और कुछ समय बाद उन्हें भी क्षयरोग हो गया। और दो वर्ष बाद 1919 में उनका देहांत भी हो गया।

GURUKUL Page No.
Date / /

~~इसे~~ इसके बाद पुनः घर बसाने की उनकी लालसा नहीं थी, परंतु मनुष्य लोगों के समझाने और सबसे अधिक अपनी माँ के प्रतिदिन के रोनेमय जीवन को सुधारने के लिए उन्हें वाध्य होकर विवाह करना पड़ा। सिरा विवाह कमलादेवी के साथ हुआ। उनका एकमात्र पुत्र रणशंकर प्रसाद सिसरे पत्नी की ही संतान थी।

(4) मृत्यु :— जीवन में अंतिम समय में वे क्षयरोग से ग्रस्त थे। 1937 - सं. 1912 उम्र - 47 उनका देहांत काशी में हुआ।

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) काव्य :—

(1) प्रेम-पथिक
(2) करुणालय
(3) महाराणा का महत्व
(4) चित्राधार
(5) कानन-कुसुम
(6) झरना
(7) आँसू
(8) लहर
(9) कामायनी

(2) कहानी - संग्रह

(1) छाया
(2) प्रतिध्वनि
(3) आकाशदीप
(4) आंधी
(5) इंद्रजाल

(3) उपन्यास :—

(1) कंकाल
(2) नितली
(3) इरावती

(4) नाटक :—

(1) उर्वशी
(2) सज्जन
(3) कल्याणी परिणय
(4) कामना
(5) राज्यश्री
(6) चंद्रगुप्त
(7) स्कंदगुप्त
(8) ध्रुवस्वामिनी
(9) एक घूँट
(10) अजातशत्रु

(5) निबंध :—

(1) काव्य और कला तथा अन्य निबंध

(6) सम्मान :—

मंगलाप्रसाद पारितोषिक 'कामायनी' के लिए।

इस प्रकार जयशंकर प्रसादजी का यह सामान्य परिचय है।

DAYANAND COLLEGE LATUR 413531

मोहन राकेश का सामान्य परिचय

(A) जीवन-परिचय :—

(1) जन्म :— मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 ई. में पंजाब के अमृतसर शहर में हुआ था। इनके पिता श्री करमचंद गुगलानी वकील थे, परंतु साहि और संगीत में वे अधिक रुचि रखते थे। जिसका प्रभा मोहन राकेश जी पर भी पड़ा। 16 वर्ष की अल्पायु में मोहन राकेश के पिता का निधन हो गया था। इनके पूर्वज सिंध प्रांत के निवासी थे।

(2) शिक्षा :— मोहन राकेश की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में ही हुई। उन्होंने लाहौर के ओरियन्ट कॉलेज में 'शास्त्री' की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर पंजाब विश्वविद्यालय से अँग्रेजी और हिंदी में एम.ए. किया।

(3) अध्यापन :— मोहन राकेश ने अध्यापन का कार्य बम्बई, शिमला, जालन्धर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में किया, परंतु इस कार्य में विशेष रुचि न रहने के कारण त्यागपत्र देकर सन 1962-63 में मासिक पत्रिका 'सारिका' का संपादन भी किया। कुछ समय बाद मोहन राकेश जी ने यह कार्य भी छोड़ दिया और स्वतंत्र लेखन का कार्य प्रारंभ किया। आपने सन 1963 से 1972 कुल 9 वर्षों तक स्वतंत्र लेखन का कार्य किया।

(4) विवाह :—

मोहन राकेश की प्रथम शादी 1950 में शुशीला से हुई। जो अपने पुत्र के साथ देहरादून में रहती थी। उनकी दूसरी शादी 1960 में पुष्पा नामक महिला से हुई, जो शीघ्र ही टूट गई, जो मूलतः जालंधर की रहनेवाली थी। 1963 में अनीता औलख से तीसरी शादी से राकेश जी खुश थे। शादी के समय अनीता की उम्र 21 साल की थी। राकेश जी की मृत्यु के बाद वह दिल्ली में कैलाश के पूर्व में रहती है।

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) उपन्यास :—

(1) अंधेरे बंद कमरे
(2) न आनेवाला कल
(3) अंतराल
(4) नीली रोशनी की बाह

(2) कहानी संग्रह :—

(1) क्वार्टर
(2) पहचान
(3) वारिस
(4)

(3) निबंध-संग्रह :—

(1) परिवेश
(2) वकलम खुद
(3)

(4) यात्रा-विवरण :—

(5) जीवनी संस्मरण —
① समय साक्ष्य

(6) डायरी :—
① मोहन राकेश की डायरी

(7) नाटक :—
① आषाढ़ का एक दिन
② लहरों के राजहंस
③ आधे - अधूरे

(8) एकांकी :—
① अण्डे के छिलके
② दूध और दांत

(9) अनूदित नाटक :—
① मृच्छकटिकम्
② शाकुंतलम्

मृत्यु :—
3 जनवरी 1972 नई दिल्ली में मोहन राकेश जी की मृत्यु हुई।

GURUKUL
DAYANAND COLLEGE OF ARTS LATUR 413531

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : सामान्य परिचय

(A) जीवन - परिचय :—

(1) जन्म :— 15 सितंबर 1927 को बस्ती में विश्वेश्वर दयाल के घर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म हुआ।

(2) शिक्षा :— सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने इलाहाबाद से उन्होंने बीए और सन 1949 में एम ए की परीक्षा उत्तीर्ण की।

(3) कार्यक्षेत्र :—

1949 में प्रयाग में उन्हें एजी आफिस में प्रमुख डिस्पैचर के पद पर कार्य मिल गया यहाँ वे 1955 तक रहे। तत्पश्चात आल इंडिया रेडियो के सहायक संपादक पद पर उनकी नियुक्ती हो गई। इस पद पर वे दिल्ली में वे 1960 तक रहे।

सन 1960 के बाद वे दिल्ली से लखनऊ रेडियो स्टेशन आ गए। 1964 में लखनऊ रेडियो की नौकरी के बाद वे कुछ समय भोपाल एवं रेडियो में भी कार्यरत रहे।

सन 1964 में जब दिनमान पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ तो वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के आग्रह पर वे पद से त्यागपत्र देकर दिल्ली आ गए और दिनमान से जुड़ गए। 1982 में प्रमुख बाल पत्रिका पराग के संपादक बने। नवंबर 1982 में पराग का संपादन संभालने के बाद वे मृत्युपर्यन्त उससे जुड़े रहे।

GURUKUL Page No.
Date

(B) साहित्यिक परिचय :—

(1) काव्य :—

(1) काठ की घटियां
(2) बांस का पुल
(3) एक सूनी नाव
(4) गर्म हवाएं
(5) कुआनो नदी
(6) जंगल का दर्द
(7) छुटियां पर टंगे लोग
(8) कोई मेरे साथ चले
(9) काला कोयल.

(2) उपन्यास :—

(1) पागल कुलो का मसीहा
(2) सोया हुआ जल
(3) उड़े हुए रंग
(4) कच्ची सड़क

(3) नाटक :—

(1) बकरी
(2) लड़ाई
(3) अब गरीबी हटाओ
(4) कल भात आएगा

(4) यात्रा - संस्मरण :—

(1) कुछ रंग कुछ गंध

(5) बाल कविता :—

GURUKUL Page No
Date

(1) बतूता का जूता
(2) महंगू की टाई

(6) बाल नाटक :—

(1) भों - भों खों - खों
(2) लाख की नाक

(7) संपादन :—

(1) शमशेर
(2) रूपांबरा
(3) अंधेरों का हिसाब
(4) रक्तबीज

मृत्यु :— 23 सितंबर 1983 को नई दिल्ली में उनका निधन हो गया।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. नाटक के तत्व, प्रकार, अवधारणा.
2. 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक की कथावस्तु
3. शंकर शेष जी के नाटक के पात्र एवं चरित्र-चित्रण.
4. शंकर पुणतांबेकर का नाटक 'रावण तुम वाहर आओ' की कथावस्तु (कथानक)
5. 'रावण तुम वाहर आओ' नाटक की समस्या या उद्देश्य.
6. शंकर पुणतांबेकरजी का परिचय
7. ~~'रावण तुम वाहर आओ'~~
'रावण तुम वाहर आओ' इस नाटक के पात्र या चरित्र-चित्रण.
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश का सामान्य परिचय.